।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

ई-पेपर

समाचार-पत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मासिक समाचार पत्र

15 फरवरी-मार्च 2026 वर्ष 18 अंक 11-12

कुल पृष्ठ - 38 वार्षिक शुल्क : ₹ 200/- (भारतवर्ष में), ₹ 2000/- (विदेश में), एक प्रति ₹ 20/-

सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

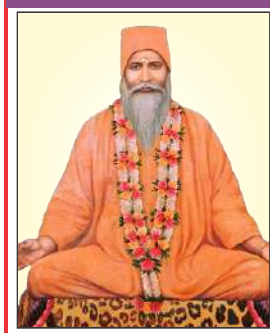

इस तरह सात दिन तक अब्दू गाँव में रह कर नियमानुसार धर्म, सत् कर्म का प्रचार करते रहे। वहाँ पर नापुरन गाँव के प्रेमी गुरु महाराज जी को लेने आये थे सो गुरु महाराज जी प्रातः सवेरे अब्दू गाँव वालों से विदा होकर गाते-बजाते गाँव से बाहर निकल कर, सब प्रेमियों को आशीर्वाद देकर चल पड़े। मार्ग में ज्ञान-चर्चाएँ करते गाते-बजाते नापुरन गाँव में आ पहुँचे। फिर सायंकाल की सैर कर स्थान पर आये तो देखा कि बागड़जी गाँव के भगत भाई मोटणराम जी वहाँ पर बैठे हैं। गुरु महाराज जी को आया देखकर भगत मोटणराम जी ने प्रसाद और भेंट आगे रखकर हाथ जोड़ कर कहा कि हे भगवन्! मुझे बागड़जी गाँव के भाई कलूमल जी ने आपके लिए ये प्रसाद दिया है और यह कह कर भेजा है कि क्वार मास की ग्यारह तिथि को यहाँ पर यज्ञ किया जायेगा। भाई कंवरराम साहेब जी को भी न्योता देकर आये हैं, सो वे भी आयेंगे और आप भी इस शुभ अवसर पर दर्शन देने की कृपा करें और चार दिन पहले पधारने की कृपा करें। हम लोग आपको लेने के लिए पाँच तिथि को आयेंगे। यह संदेश सुन कर गुरु महाराज जी ने निमंत्रण सहर्ष स्वीकार कर कहा कि ठीक है अब सत्संग का समय होने जा रहा है, चलो तो सत्संग में चलें। फिर गुरु महाराज जी के साथ सब लोग सत्संग-मण्डप में आये। वहाँ पर भाई आवतराम जी ने गुरु महाराज जी से कहा कि यह भगत मोटणराम जी बहुत अच्छा भजन जानता है, सो कृपा कर पहले इससे भजन करवाओ। यह सुन कर गुरु महाराज जी ने भगत मोटणराम जी को भजन करने की आज्ञा दी। आज्ञा पाकर घंटे भर तक भगत मोटणराम जी ने सत्संग किया। फिर गुरु महाराज जी ''संग'' के विषय पर बोलते हुए कहने लगे कि यह जीव संग के द्वारा ही डूबता है व संग के द्वारा ही पार हो जाता है।

दोहा- **होत सु संगति सहज सुख, दुःख कुसंगति जान।**
गन्धी और लुहार की, देखो बैठ दुकान ।।

अच्छे लोगों के संग से इस जीव को सहज में ही सुख की प्राप्ति होती है। और बुरे विचार वाले लोगों के संग से इस जीव को दुःख के सिवा और कुछ भी नहीं मिलता। गंधी (इत्र बेचने वाला) की दुकान पर बिना कुछ खरीद किये वैसे ही जाकर बैठेंगे तो भी इत्र की सुगन्ध तो अवश्य ही आयेगी, चाहे वह इत्र शीशियों में बन्द और अलमारियों में क्यों न पड़ा हो। लुहार की दुकान पर बैठने से बिना चाहे ही आग की गर्मी, धुआँ और चिनगारियाँ तो जरूर ही लगेंगी। विषय को और भी समझाते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि-

शेष पेज नं. 2 पर...

पेज नं. 1 से आगे...

दोहा- **नीच नरन के संग कर, भोगे दूख अपार।**

सीधा जावे नरक में, या तो यम के द्वार ।।

इस जीव का कुकर्मियों, पापियों और मूर्खों के संसर्ग से पतन हो जाता है। वह मनुष्य निश्चय ही नरक में जा गिरेगा, अथवा यमलोक की यातनाएँ भोगेगा।

दोहा- **श्रेष्ठ जनों का संग कर, कह टेऊँ कर प्यार।**

पावेंगे पद परम को, ना तो स्वर्ग द्वार ।।

और आत्मज्ञानी, परम विवेकी श्रेष्ठ पुरुषों के संसर्ग से जन्म-मरण के महान चक्कर से छूट कर अविनाशी परम पद को पाकर मुक्त हो जाओगे। परन्तु कुछ कमी रह भी गयी तो भी स्वर्ग के सुखों को तो अवश्य ही प्राप्त कर लोगे। सुसंग करने से इस मनुष्य का जन्म सार्थक हो जाता है और भगवान को प्राप्त करने की योग्यता भी उसमें आ जाती है। भगवान ने यह नर तन विशेषकर इसलिये ही दिया है ताकि नाना प्रकार की योनियों में भटका हुआ यह जीव फिर से आकर मुझ से मिले। आगे और गुरु महाराज जी कहने लगे कि-

दोहा- **अब का बिछुड़ा ना मिले, करे यतन बहु कोय।**

कह टेऊँ मन समझ ले, जो होया सो होय ।।

जन्म-जन्मान्तरों से परमात्मा से बिछड़ा हुआ यह जीव यदि इस जन्म में परमात्मा से न मिल सका तो फिर अनेक उपाय करने पर भी यह जीव भगवान से मिल न पायेगा। गुरु महाराज जी स्वयं कहते हैं कि हे मन ! जरा विचार कर देख, यह मनुष्य शरीर ही परमात्मा को प्राप्त करने का एकमात्र साधन है। इस जन्म के बिछड़े हुए को युगों तक का बिछड़ा हुआ समझो और इस जन्म के मिले हुए को युगों-युगों का मिला हुआ समझो।

दोहा- **अब का मिला न बीछड़े, रहे जुगांजुग मेल।**

कह टेऊँ मन समझ के, चलो मिलन की गेल ।।

उपर्युक्त दोहे की व्याख्या करते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि हे जीव ! विचार कर भगवान से मिलने का मार्ग लेकर जाकर भगवान से मिल। मार्ग के सिवा तो प्रभु को पाया ही नहीं जा सकता। वैसे तो भगवान को प्राप्त करने के अनेकानेक मार्ग बताये गये हैं। परन्तु कुछ मार्ग संकरे हैं, तो कुछ टेढ़े हैं, तो कुछ छोटे हैं या तो बहुत लम्बे चक्कर वाले हैं पर एक बड़ा चौड़ा व सीधा रास्ता भी है, जिसके द्वारा यह जीव जल्दी ही अपने लक्ष्य को पहुँच सकता है।

मतलब समझाते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि जप, तप, व्रत-नियम, पाठ-पूजा, सन्ध्या, गायत्री आदि और भी अनेक साधन हैं, वे सब छोटे व संकुचित मार्ग बताये गये हैं। जिनमें से यह जीव बहुत धीरे-धीरे चलता हुआ जाकर भगवान से मिलता है, यह पहला मार्ग है। दूसरा मार्ग है तीर्थों का स्नान, दान, योग, यज्ञ आदि। ये जितने भी साधन हैं वे टेढ़े बताये गये हैं, जिनमें से यह जीव चल कर स्वर्ग आदि लोकों को घूमता-फिरता अनेक जन्मों के पश्चात् जाकर भगवान से मिलता है। तीसरा मार्ग तत्त्ववेत्ता सन्तों महात्माओं का संग है, यही एक बड़ा व सीधा रास्ता है, सुसंग का जो रास्ता है, वह सर्वोत्तम रास्ता है। इस मार्ग में कोई भी भय गतिरोध नहीं करता। इस मार्ग पर चलने वाला जल्दी ही भगवान से जाकर मिलता है। फिर यह जीव चौरासी के चक्कर में नहीं आता। इसलिये सत्पुरुषों का संग करके भगवान से मिलना चाहिये। एक बार मिल जाने पर यह जीव स्वयं, सो जुदा होने की इच्छा न करे, बाकी भगवान इसको कभी भी जुदा नहीं करेगा।

छन्द- **मिला प्यारा लथी दिलिगीरी, मन विचि भयी खुशहाली।**

जिति वलि देखां तिसि वलि दिसन्दा, उस बाझों जाय न खाली ।।

आपे खावन्द आपे बरदा, आपे जग दा वाली।

सन्त रैण वो मिलिया असां नूं, जहिंदी बिछुड़ण दी नहिं चाली ।।

शेष अगले अंक में...

।। ॐ सत्नाम साक्षी ।।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मुखपत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

15 फरवरी-मार्च 2026

वर्ष 18 — अंक 11-12

मंगल आशीष

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

संस्थापक

सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

संरक्षक-मार्गदर्शक-प्रेरणास्त्रोत

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिये	₹ 200	₹ 2000
दो वर्ष के लिये	₹ 400	₹ 4000

मनीआर्डर भेजने व पत्र व्यवहार के लिये पता :
व्यवस्थापक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ,
लश्कर, ग्वालियर-474001 (मध्यप्रदेश)
मोबा. 0751-4045144
सम्पर्क समय : प्रात 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)
e-mail : premprakashsandesh@gmail.com

Bank Facility

आईडीबीआई बैंक में आप कोर सुविधा/मनी ट्रांसफर के माध्यम से भी निम्न खाते में शुल्क जमा कराके फोन 0751-4045144 पर अथवा व्हाटस् एप नम्बर 8989701236 पर सूचना दे सकते हैं.

A/c 92610010000468
Net Bankig : IFSC: IBKL0000545
Editor Prem Prakash Sandesh, Gwalior

नई सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिये सदस्यता शुल्क आप मनीआर्डर/कोर बैंक माध्यम के अलावा सद्गुरु महाराज जी की यात्रा के समय बुक स्टॉल पर व देश भर के विभिन्न शहरों में हमारे प्रतिनिधियों के पास जमा कर सकते हैं. इसके अलावा परम पावन गुरू धाम श्री अमरापुर दरबार (डिब), जयपुर के श्री अमरापुर सत्साहित्य केन्द्र में प्रतिदिन एवं रविवार प्रातः 8 से 12 व प्रत्येक गुरुवार-शनिवार सायं 5 से 8 बजे तक श्री कुमार चन्दनानी, श्री नारायणदास रामचंदानी, श्री निहालचंद तेजनानी व श्री अशोक कुमार पुरसानी के पास जमा किया जा सकता है.

कविता

चैत्र चन्द्र (चेटी चंड)

नव चैत्र चंद्र के दर्शन मानों नव विधु सोहे शंकर शीष
आया है नव वर्ष लिए नव स्वर नव आशाएँ आशीष।
प्रकृति झूम करतीं स्वागत कण कण मुस्काता पुलकित है
श्यामल भँवरे नव गीत सुनाते आम्र मँजरी हुलसित है।
वन उपवन में पुष्पों ने रंगों की गागर छलकाई
सजी धरा पर नवल रंगोली नगर वीथिका महकाई।
नव किसलय से वृक्ष सजे मानों धारा हो नव परिधान
स्वर्णिम बाली से अन्न बरसता विहँसे कृषक खेत खलिहान।
हुईं अवतरित माँ दुर्गा दस दिशि में गूँजा जय जयकार
धूप दीप नैवेद्य सजा माता का सब करते सत्कार।
शिशु समान अबोध मानस से जो भी करता अर्पित भक्ति
माँ के वरद हस्त किरपा से वह पाता तन मन की शक्ति।
इसी माह राम जन्में धरती अम्बर सब चहक उठे
बही भक्ति की रस धारा मन कदम्ब कुंज से महक उठे।
राम व्याप्त सर्वत्र जगत में कण कण में दर्शन कर लो
उनकी कृपा असीम अनन्त है सब अपनी झोली भर लो।
पावन चेटी चंड को प्रकटे महासंत श्री झूलेलाल
जग ने पाया अनमोल रत्न अरु सिंधु भूमि हो गई निहाल।
उनके वचनामृत को अपने निज जीवन में तुम ढालो
चरण वन्दना कर श्रद्धा से भक्ति का प्रसाद पालो।

अनुक्रमणिका

अनुक्रम	विषय	पृष्ठ
01.	सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी	1-2
02.	भक्त की थी भाव भरी पुकार-सांई पहुंचे उसके द्वार	4
03.	सतोगुण अपनाने से आत्मज्ञान प्राप्त होता है....... स्वामी सर्वानन्द जी महाराज हृदयोद्गार	5-8
04.	होली उत्सव क्या संदेश देता है?स्वामी हरिदासराम जी महाराज के अमृतवचन	9-10
05.	सद्गुरु की शरण पूर्ण बंधन से मुक्त करती है । वात्सल्यमूर्ति पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के अमृतवचन	11-13
06.	शिवरात्री पर शंकर जी ने लिया रूद्रावतार	14
07.	भक्ति कब प्राप्त होती है (प्रेरक प्रसंग)	15
08.	प्रेम तत्व	16-18
09.	धर्मावतार भगवान श्री झूलेलाल (चेटीचण्ड विशेष)	19-20
10.	भगवान श्री झूलेलाल का संक्षिप्त जीवन परिचय	21
11.	सांई टेऊँराम द्वारा भगवान श्री झूलेलाल जी की स्तुति	22
12.	रामकथा है अमृत सागर	23
13.	प्रेम प्रकाशी जगत का महाकुम्भ मेला-चैत्र मेला	24-25
14.	चैत्र मेला सिन्धी बारहवीं तारीख को ही क्यों ?	26
15.	भजन	27
16.	अनेक रोगों का एक ही उपचार-प्रातः पानी प्रयोग	28
17.	ग्वालियर में बाबागणेशानन्दजी महाराजका 125वां जन्मोत्सव धूमधाम से सम्पन्न	29-30
18.	समाचार डायरी-महाशिवरात्री, होली समाचार	31-33
19.	जयपुर में श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का 105वां चैत्र मेला सूचना	34
20.	अमरापुर गमन	35
21.	भजन श्री हरकेश वधवा	36
22.	व्रत-पर्व-उत्सव	37
23.	पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज एवं संत मण्डली का यात्रा कार्यक्रम	37
24.	ब्रह्मदर्शनी (सिंधीअ में समुझाणी)	38

भक्त की थी भाव भरी पुकार – साईं पहुँचे उसके द्वार

भक्तवत्सल त्रिकालदर्शी थे – साईं टेऊँराम जी महाराज

सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की अद्भुत महिमा

प्रेम जे रंग में जोई रचे थो, प्रभू तहिं वटि पाण अचे थो,
मन में प्रेम वधाई।।

सच्चे संत-महापुरुष त्रिकालज्ञ होते हैं, उनसे कुछ छिपा नहीं होता. भगवत् भक्तों की सरल भाव की निच्छल प्रीति से राजी होने वाले संतों-सत्पुरुषों की महिमा अनिर्वचनीय है. अहेतुक कृपालु संत-सद्‌गुरु सच्चे भगवद् भक्तों की शुभ मनइच्छा को भी अवश्य पूरी करते हैं. बस हमारा मन हृदय सच्चे भक्ति-भाव से उनमें प्रीति व दृढ़ विश्वास रखे. ऐसे ही दृढ़ विश्वासी भक्त मंघाराम 'ओदु' ने त्रिकालदर्शी सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की ऐसी अहेतुकी लीला के दर्शन किये. जिसे सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम चरितामृत में भी दर्शाया गया है. आइये ऐसे पावन प्रसंग को हम भी पढ़-सुनकर अपने मन हृदय में गुरुदेव भगवान के प्रति अपनी भावभक्ति को प्रगाढ़ करें.

एक बार सिन्ध में देशाटन करते-करते कमीजन कस्बे में लोगों को भगवत्मार्ग की ओर उन्मुख करते हुए एक दिन सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत मण्डल के साथ शाम के समय जंगल का भ्रमण करते हुए, शहर के बाहर उत्तर दिशा की ओर चले गये. एक मील के करीब चले होंगे कि संतों ने सद्‌गुरु महाराज जी से कहा- हे प्रभो! अब बहुत ही पैदल चल चुके हैं, देर भी हो गयी है, अब लौटना चाहिए. सद्‌गुरु महाराज जी ने उनसे कहा- इधर इस दिशा में हमें कोई आवश्यक कार्य है, आप हमारे पीछे आइए. अब कौन समझे महापुरुषों की अनन्य लीला को! किस प्रकार भक्तों के मनोरथ सिद्ध करते हैं, उनकी लीला वे ही जानें. आखिर डेढ़ मील चलने के बाद मार्ग के किनारे पर 'ओदनि' (कुमावत या मकान बनाने वाले कारीगर लोग) के दस बारह मकान थे. वहाँ पर पहले से ही आसन बिछाये गये थे और प्रसाद भी तैयार करके रखा हुआ था. उन्हें पक्का विश्वास था कि श्री गुरुदेव भगवान हमारे यहाँ जरूर पधारेंगे.

सद्‌गुरु महाराज जी को आया देखकर अश्रुपूरित नेत्रों एवं गद्‌गद् भाव से मंघाराम 'ओदु' (मकान बनाने वाला कारीगर) ने कहा- हे भगवन्! मैंने सुना था कि सद्‌गुरु महाराज जी कमीजन (गाँव) में आए हैं. मन में विचार उठा कि जाकर दर्शन कर आऊँ और सद्‌गुरु महाराज जी को विनती कर अपने घर पर ले आऊँ ताकि आप अपने श्रीचरण कमल यहाँ पखारकर हमें कृतार्थ करें. परन्तु अचानक मेरा छोटा लड़का बहुत ही बीमार हो गया. इस कारण मैं आपके दर्शन करने नहीं आ सका. आज सुबह मैंने अपने साथी ओदों (कारीगरों) से कहा कि आज वे काम पर नहीं जाएँ. अगर मेरे सद्‌गुरु सच्चे और त्रिकालदर्शी हैं और मेरा विश्वास भी सच्चा और पक्का है तो वे स्वयं मेरे पास आएँगे. मैं आज व्रत रख रहा हूँ, सद्‌गुरु महाराज जी के दर्शन करने के बाद ही व्रत खोलूँगा. ऐसी आश और विश्वास के साथ आपकी प्रतीक्षा में आपके आने की राह निहार रहा था.

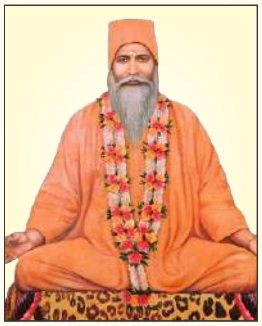

अपने इस तुच्छ भक्त के अन्तर्मन की इच्छा को जानकर आपने अपना मंगल दर्शन करवाया. इसके लिये ये दास और हम सभी ओदु आपका कोटि-कोटि अभिनन्दन करते हैं, रोम-रोम आपका शुकराना करता है. आपकी अहेतुकी कृपा हमारे जीवन को उज्ज्वल करेगी ऐसा मेरा विश्वास है. अब तो हमें पक्का विश्वास हो गया –

घर ईन्दो आ– न छडीन्दो आ, भक्त वत्सल भक्तनि जे......

भक्तवत्सल सद्‌गुरु महाराज जी ने वहाँ पर करीब एक घण्टे तक सत्संग किया. तत्पश्चात् उन्होंने पल्लव पाकर बच्चे के स्वस्थ होने के लिए अरदास (प्रार्थना) की और उसे अपना स्नेहिल आशीर्वाद दिया. भक्त की ऐसी प्रेमभरी पुकार पूरी करके सद्‌गुरु महाराज जी कमीजन गाँव में अपने स्थान पर लौट गए.

त्रिकालज्ञ, सर्व ऋद्धियों-सिद्धियों के दाता, सबके दुःख-दर्द हारक, भक्त वत्सल सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पावन श्रीचरणों अनन्त कोटि प्रणाम!

सद्‌गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश — जहाँ तक हो सके तीनों अवस्थाओं बाल, जवानी, वृद्धावस्था में भक्ति करनी चाहिए। भक्ति के द्वारा ही मनुष्य परम पद अविनाशी देश को पा सकता है।

सतो गुण अपनाने से आत्म ज्ञान प्राप्त होता है

तपोनिधि, पुण्य पुंज प्रातः स्मरणीय परम पूज्यनीय सद्गुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज जी के हृदयोद्गार

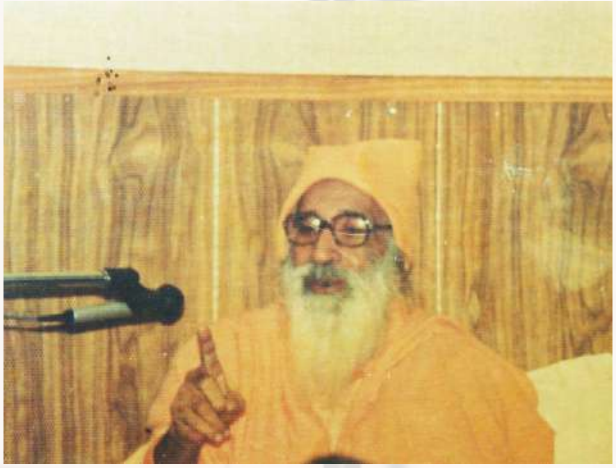

गज के बोलो सनातन धर्म की जय
रामकृष्ण भगवान की जय
सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की जय
सर्व सन्तन की जय
प्रेम प्रकाश मण्डल की जय
भारत माता की जय
गंगा मैया की जय

दोहा– त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या च द्रविणम त्वमेव,
त्वमेव सर्वम् मम देव देव ।।

हम अनाथ अतिशय दुखी डरयो देख संसार,
डूबत हूँ भव सिन्धु में मोहि करो प्रभु पार ।

दीन दर्द दुःख भंजना घट-घट नाथ अनाथ,
शरण तुम्हारी आईयो, नानक के प्रभु साथ ।

दीन हीन बल हीन हूँ मोहि भरोसा तोरि,
टेऊँ तुम बिन को नहीं तुम ही हरि इक मोरि ।

प्रेम से बोलो हरे राम, सारे पूजने योग्य महात्मा मण्डल तथा प्रेमियों, सत्संगियों, गुरमुखो, आज इस ब्रह्म यज्ञ की समाप्ति है, मन इच्छित फल पाकर जाओ, सन्त महात्मा फल देने वाले हैं, सत्गुरु महाराज, भगवान सब हाजिर हैं, सारे बैठे हैं, सत्गुरु महाराज को, जितने बैठे हो प्रार्थना करो । क्या प्रार्थना करो, भुलाना नहीं याद रखना–

सत्गुरु तुम पूरण करो, मेरी यह अरदास,
कह टेऊँ मन में कभी रहे न जग की आस ।

हे भगवान संसार के किसी पदार्थ की इच्छा न रहे, मेरा मन निर्मल हो जावे कैसे हो जावे ?

जप मन राम-राम-राम,
हरे-हरे-राम-राम-राम-राम

इस विधि होवे मन हमारो,
सत्गुरु मुझ पर कृपा धारो
राम-राम-राम
इस विधि होवे मन हमारो-२

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश मनुष्य जो कार्य प्रारम्भ करे उसे अवश्य पूर्ण करे ।

१. माटी कंचन एक समाना-२
नारी नर का रहे न भाना
होय न कब मन मांहि, रंचक मारो-थारो
इस विधि होवे ....

प्रेम से बोलो हरे राम

हे सतुगुरु महाराज माटी कंचन एक समान हो जावे, स्त्री-पुरुष, बाल-बूढ़ा, चींटी से लेकर हाथी तक एक आत्मतत्व देखने में आवे, भेद न होवे । मेरे मन, दिल में तेरा मेरा न रहे । ये मेरे पर कृपा करो, दूसरी क्या कृपा करो ।

२. स्तुति निन्दा सम हो जावे
बैरी मीत नजर न आवे,
ऊंच नीच के मांही देखूँ प्रभु प्यारो,
इस विधि होवे ....

हे सतुगुरु महाराज कोई स्तुति करे, निन्दा करे, गिला करे उस पर मान न हो, बैरी मित्र एक समान हो जावे, ऊंच-नीच के मांही देखू प्रभु प्यारो, अर्न्तयामी देखे।

३. हर्ष शोक पुनि मैं तूँ नासे
मान अमान न सुख दुख भासे
होवे मुख के मांहि हरदम- ओम उच्चारो
इस विधि होवे ....

राग-द्वैष, स्तुति-निन्दा, मान-अपमान एक समान हो जावे । सुख-दुख न भासे मुख में हर दम पल-पल होवे, ओम-ओम-ओम, शिवोऽम-शिवोऽम-शिवोऽम । ये मेरे मुख में आवाज होवे, मेरे मुख से निकले-

४. कहे टेऊँ कब वे दिन होंगे,
सुख से सम की शैया सोंगे
भासे सब जग मोहि पूरन ब्रह्म पसारो
इस विधि होवे ....

प्रेम से बोलो हरे राम, सतुगुरु महाराज, हे भगवान ।

कहे टेऊँ कब वे दिन होंगे, सुख से सम की शैया सोंगे ।
सब में अन्तर्यामी भासे सर्वजग मोहि पूरन ब्रह्म पसारो ।

ये जगत ब्रह्म रूप है ये भासे, हे प्रभु ये कृपा करो, मेरे पर यही दया धारो । ये न आप मांगेंगे, तो पुत्र, धन, पदार्थ ये प्रभु आपही आपको देंगे । हे अन्तर्यामी हे भगवान मैं आपके शरण आया हूँ । हे परमपिता, समर्थदाता, परिपूर्ण, सदा सुखदायक, अविनाशी, घट-घट वासी, सच्ची सुमति देना, सच्ची सम्पत्ति का दान देना, नगर वन में रक्षा कीजे, अभय दान प्रभु मुझको दीजे, देश परदेश दासों बच्चों की रक्षा करना, धर्म की लज्जा रखना, अपनी चलती चलाना, अन्तकाल सुहेली करना । अन्तकाल के लिये ये सारे साधन है । हे प्रभु अन्तकाल सुहेली करना तन, मन, धन, वाणी करके मेरे द्वारा किसकी दिल दुखी न होवे । हे प्रभु में आपका बच्चा हूँ, ये मेरे पर कृपा करना । आप सभी ने गुरु महाराज जी के इस मेले में सन्तों-महात्माओं, ऋषि मुनियों के प्रवचन सुने है । मन से पूछा- क्यों कुछ फायदा हुआ ? सन्तों की बात समझ में आई और उस पर आप विश्वास करेंगे तो इसी लोक-परलोक आप सुखी होंगे । कभी दुनिया का दुख आपको स्पर्श नही करेगा । अगर यह बात समझ में नहीं आई तो समझने की उत्कंठा है

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

हम सांसारिक सम्बन्धियों व मित्रों के लिए व्यर्थ आँसू बहाते हैं । प्रभु के विरह में गंगा जमुना बहानी चाहिए ।

आपको कि यह महात्माओं की बात समझें, उस पर स्थित करें, विश्वास करें। हे मेरे मन कि ये भी आपको है कि हां ठीक मेरे को उत्कंठा है, प्रेम है कि समझे तो भी आप धन-धन हैं आपका मेले पर आना सफल हुआ। ये जो गुरु महाराज की पोशाक आपको दिखाई गई है, इसका मतलब क्या है ? जैसे हमारे सत्गुरु महाराज ऋषि, मुनि, महात्मा सादगी करते हैं, सादगी करो। फैशन न करो। फैशन से रजो गुण होगा, रजो गुण से अशांति होगी, अशांति से बुद्धि मलीन होगी, बुद्धि मलीन से पाप कर्म होगा, पाप कर्म से यह जीव सीधा नरक चौरासी में जायेगा। सादगी से मन सतोगुणी होगा, सतोगुण से भगवान का दर्शन होगा, आत्म ज्ञान होगा, आत्म ज्ञान से मोक्ष होगा, इसलिये जितने माई-भाई बैठे हो सादगी करना। फैशन नहीं करना। इसका दिखाने का यह मतलब है कि जितने महात्मा-ऋषि मुनि हुए हैं सादगी करके पाया है-

त्याग तप सच सादगी, प्रार्थना विश्वास
कहे टेऊँ ये साधके, पाओ सुख अविनाश

सत्गुरु महाराज ने प्रेम प्रकाश ग्रन्थ में लिखा है- प्रेम से बोलो हरे राम त्याग का आगे प्रेमियों को सुनाया है चित का त्याग करो, दोनों त्याग होवे तो क्या कहें। मेरा कुछ नहीं जो कुछ है ईश्वर भगवान का है। मैं सेवाधारी हूँ ऐसे नहीं बाल-बच्चों घर का त्याग करो। ये आगे प्रेमियों को सुनाया है। ये आज उपश्म उपसंहार होता है। मेले को सत्संग पहले दिन प्रार्थना करके शुरू किया था।

त्याग कैसे करो, सत्गुरु महाराज का सोलह शिक्षा पत्र छपा हुआ है। हिन्दी, सिन्धी, गुरमुखी में बाहर रखा हुआ है बहुत प्रेमियों के घर में हैं। घर में न होवे तो ले जाना। उसमें गुरु महाराज जी ने लिखा है कि कैसे संसार में रहना है-

धर्मशाला जान जग को, जीव सब मेहमान हैं
मोह किस से ना करो, सब स्वप्न का सामान है।

ये मोह ही इसी जीव को दुख देता है। अर्जुन जैसे वीर को युद्ध में किसने पकड़ा, मोह रूपी अन्धेरे में आ गया। अर्जुन को यह डर नहीं था कि ये राजा मुझे मारेंगे इसलिए हथियार छोड़ दिया, उसी समय कृष्ण भगवान हाजिर था उसने ऐसा तो आत्मज्ञान, ब्रह्मज्ञान का सूर्य उदय किया कि अन्धेरा चला गया, ये मोह रूपी अन्धेरा है। त्याग ही है, ये सच्चा त्याग जिसने चित का त्याग किया है वो संसार के अन्दर सच्चा त्यागी है। त्याग तप ये याद करना जितने जिज्ञासु विमोखी बैठे हो। जिसको परमपद की इच्छा है, भगवान के दर्शन की इच्छा है। त्याग तप करो। बहुत प्रकार का तप है। वाणी का तप करो। बहुत नहीं बोलो, अभी दास बड़ा प्रसन्न हुआ है ऐसी शान्ति की है कि इसी लोक परलोक गुरु महाराज आपको शान्ति देगा।

तप करो- वाणी का तप, नेत्रों का तप मातायें-बहिनें जो बड़ी है उसे माता समझो, एक जितनी को बहन समझो, छोटी को बच्ची समझो ये नेत्रों का तप करो। मातायें भी तप करें। पति के सिवा बड़े मेरे पिता के समान हैं, एक समान भाई हैं व छोटे मेरे बच्चे हैं। ये नेत्रों का तप करो। दूसरा क्या तप करो कौन ? एकादशी का व्रत रखो उसी से क्या होगा पहले तो तप का गुण है। हमारे गुरु महाराज के मंडल वाले शनिवार का व्रत रखते हैं। हम भी रखते हैं उसी के साथ मौन हो तो बहुत अच्छा। मौन का न हो तो व्रत रखो। इससे क्या होगा एक तो तप का गुण हैं, दूसरा शरीर की तन्दुरुस्ती होगी, तीसरा अनाज बच जायेगा। जो विलायतों से नहीं मंगाना पड़ेगा।

हिन्दुस्तान के अन्दर सारे पंडित ब्राह्मण उपदेश करें। हिन्दुस्तान के अन्दर रात दिन में १२ करोड़ मन अन्न बच जायेगा। बाहर से नहीं मंगाना पड़ेगा। एक तप का गुण दूसरी शरीर की तन्दुरुस्ती, तीसरी अनाज की बचत, चौथा अन्तः करण की शुद्धि। इसमें बहुत गुण हैं। त्याग तप, सच सादगी, भाई सादगी करना, ये शरीर है गन्दा है गन्दगी है। शमशान में भस्म हो जायेगा इसलिये अपने सुख के लिये झूठ मत बोलना परोपकार करो, सादगी करो

सद्‌गुरु हरिदासराम वचनावली

जहाँ जन्म है, वहाँ मृत्यु। जहाँ उत्पत्ति है, वहाँ विनाश। मृत्यु का पीछा उसी दिन से हमारे साथ शुरू हो जाता है, जब से हमारा जन्म है। मृत्यु भी कई प्रकार की होती है। रोग भी मृत्यु है, गरीबी भी मृत्यु है और अभिमान भी मृत्यु है।

। सादगी प्रार्थना । प्रार्थना भी हर रोज करो सत्गुरु महाराज को ।

आशवन्दी गुरु तो दर आई तुम बिन ठौर न काई
तुम हर दाता तुम हर माता ।

प्रेम से बोलो हरे राम, प्रार्थना करना, सत्गुरु को भगवान को प्रार्थना करना । त्याग, तप, सच, सादगी, प्रार्थना, विश्वास, एक बड़े में बड़ा साधन है विश्वास होवे पूरन श्रद्धा होवे । कबीर साहब ने कहा है–

कल्प वृक्ष को बीज जो, गुर बोयो उर मांहि
श्रद्धा जल सींचे बिना, उग सकता सो नाहिं
सत्यदेव गुर वाक्य है, श्रद्धा उर विश्वास
समाधान तांको कहत है, मन विक्षेप को नास

विश्वास इसी में सत शास्त्र गुरु के वचन में विश्वास सत्गुरु के वचन में क्या विश्वास करो ?

सत्गुरु क्या कहता है–

पूरन धर विश्वास गुरमुख गुर के वचन में ।
पूरन धर विश्वास गुरमुख गुर के वचन में ।।

साक्षी चेतन रूप तुम्हारा, चारों वस्था मांहि प्यारा ।
खेलत बारह मास, जैसे भूप भवन में ।।१।।

बैठ अकेला तत्व विचारो, अपना आतम रूप सम्भारो ।
होवे संसा नास, पाओ आनन्द मन में ।।२।।

देह मलिन का तज अभिमाना, भेद भरम हरके अज्ञाना।
आदि पूरुष अविनास, देखो दिल दर्पण में ।।३।।
अपने अन्तर ध्यान लगाये, कहे टेऊँ स्वरूप समाये ।
निश दिन करो निवास, निर्भय शान्ति सदन में ।।४।।

प्रेम से बोलो हरे राम– ये जो वेदान्त चला है न मेले में

साक्षी चेतन रूप तुम्हारा, चतुर्थ वस्था खेलन हारा–खेल है बारह मास जैसे भूप भवन में । यह विश्वास करना कि इसी से क्या होगा ?

कहे टेऊँ इसके किये पाओ सुख अविनाश अविनाश सुख जो ब्रह्माण्ड का सुख है उसे पाओ । प्रेम से बोलो हरे राम । पुरुषार्थ भी करो, प्रार्थना भी करो । वस्तु प्राप्त हो उसके बाद भी प्रार्थना करो, नहीं तो प्रभु की माया बड़ी प्रबल है ।

धीरे–धीरे तुम त्याग रे अब दुनियादारी
हरि का मार्ग बहुत कठिन है,
भक्ति का मार्ग बहुत कठिन है ।

ये माया से हरदम डरना । यह बड़ी विचित्र है । प्रभु का मार्ग बड़ा कठिन है । चींटी के मार्ग की तरह सूक्ष्म है, चिकनाई ऐसी है कि फिसल गया तो पाताल में चला गया, पहाड़ कर चढ़ाई की तरह खतरनाक है पीछे गिर गया तो नहीं बचेगा । अगर आप ऐसे मार्ग पर नहीं चल सकते हो तो नहीं, चलना नहीं स्थिर हो जाना पर पीछे भी नहीं हटना । आप जो न वही खड़े रहेंगे तो सद्गुरु महाराज जी आयेंगे और आपको आगे चलायेंगे । तलवार की धार पर चलना है । वो कैसे ? मान–अपमान–शोक– सुख–दुख, मछली मांस नहीं खाना, शराब नहीं पीना, जुआ नहीं करना, सिनेमा नहीं जाना, दहेज न लेना न देना, रिश्वत का पैसा नहीं लेना–देना । शुभ कर्म करना । यह प्रार्थना करेंगे तो गुरु महाराज अच्छा करेंगे । हे सद्गुरु महाराज मेरी इच्छा पूरी करो, मैं आपके सामने पैदल आई हूँ ।

आशवन्दी गुर तो दर आई..............

तन मन धन अर्दास करे मैं मांगत नाम स्नेही । वो नाम देके शागिर्द बनाके, जो मेरा अन्तः करण मलीन हुआ है उसे सत्संग रूपी नदी पर बैठकर वचनों रूपी साबुन लगाकर साफ करो । ये कृपा करो दूसरी क्या कृपा करो ?

कहे टेऊँ गुर तीन लोक में आवागमन मिटाई

हे सद्गुरु महाराज आवागमन का फेरा मिटाना, फिर माता के गर्भ में मैं नहीं आऊं । ये कृपा करना । इस तरह की प्रार्थना करो । अभी पल्लव अर्दास हो रही है, आप भी सभी सत्संगी प्रेमी इसी प्रकार की प्रार्थना करो ।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

गुरुदेव से प्रार्थना करें – अब मेरा उद्धार करो
ताकि अन्तिम क्षणों तक मेरा मन नाम में लगा रहे व सांसारिक इच्छा का उदय न हो ।

होली उत्सव, क्या सन्देश देता है ?

परम श्रद्धेय, परमादरणीय पूज्य श्री सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के अमृतोपदेश

प्रार्थना : हे अखण्ड, हे अपार,
ज्ञान ध्यान के भण्डार
बार-बार नमस्कार सवीकार कीजिए ।
सद्गुरु सर्वानन्द हमें, अभयदान दीजिए
अभयदान दीजिए
कर्म काट लीजिए-२
सद्गुरु सर्वानन्द हमें..................।

प्रातः स्मरणीय परम श्रद्धेय सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज अपने जीवन में अपने ही मन को समझाने का भरसक प्रयास कर रहे हैं कि यदि तुम्हें संसार समुद्र से पार होना है तो प्राचीन समय से ही होली खेलने का जो उत्सव मनाया जा रहा है, वो होली का उत्सव हमारे जीवन में क्या सन्देश लेकर आता है ? यह उत्सव हमारे जीवन में यह पैगाम लेकर आता है कि भक्त प्रहलाद ने जिस तरह भगवान श्रीराम को प्राप्त किया एवं संसार समुद्र से पार हो गये, उसी तरह हम भी भगवान श्रीराम को प्राप्त करके उस अवस्था को पा सकते हैं ।

हिरणयकश्यप जो भक्त प्रहलाद का पिता था, वह ज्ञानी, ध्यानी व तपस्वी था । उसने भारी तप किया था एवं उसी तप के बल से अपने आप को सारे जगत का भगवान मान लिया एवं दूसरों को भी स्वयं को भगवान मानने के लिये मजबूर कर दिया और श्रीराम को भूल गया ।

भजन : हिरणा कश्यप राम विसारियो,
नरसिंह तहिंजो पेट हो फाड़ियो
प्रहलाद पातो राम...........

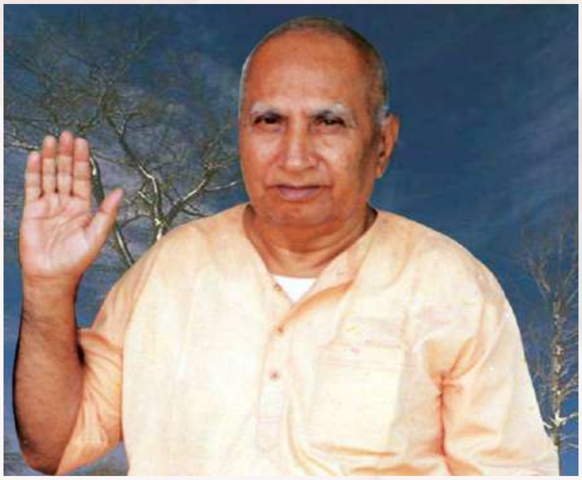

घड़ी-घड़ी जप रामः जो नालो
मता विसारी राम...........

तप से उसे देवलोक का भी राज्य मिला । सभी देवता भी उसे भगवान मानने लगे कोई डर से, कोई ज्ञान से, कोई प्रेम से तो कोई श्रद्धा से । कई मायने होते हैं मानने के जब सभी मानने लगे, तो बेटा भी मानने लगा पर कब तक ? जब तक सच्चाई सामने न आ जाये ।

प्रहलाद बालक तो था ही, एक दिन निकल गया नगर के बाहर, बाहर निकलते ही किसी घर के बाहर उसने मां-बेटी का संवाद सुना, जिन्होंने मिट्टी के मटकों को पकाने के लिये आव जला रखा था । उसी आव में बिल्ली के बच्चे चले गये । छोटी बच्ची ने अपनी मां से आव बुझाने के लिये कहा, तब मां ने कहा कि यदि आव बुझायेंगे तो मटके कच्चे रह जायेंगे तो हम भूखे रह जायेंगे, तो फिर हम

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश आप अपनी तरफ से सबकी भलाई करते रहो । उनकी गति वे ही जानें ।

खायेंगे क्या ?

बच्ची ने जिज्ञासापूर्ण होकर मां से पूछा फिर इन्हे बचायेगा कौन ? मां ने उत्तर दिया, श्रीराम जी आकर बचायेंगे इन्हें। मां की यह बात प्रहलाद के कानों में पहुंच गयी। भगवान श्रीराम तो मेरे पिता हैं। मेरे पिताजी ही आकर बिल्ली के बच्चों को बचायेंगे। यह बात प्रहलाद ने नन्ही बालिका से कही। बालिका ने कहा, तेरे पिता नहीं, तेरे पिता का जो पिता है श्रीराम- वो आकर बचायेंगे। समय आया तो आव को खोला गया। प्रहलाद देखने लगा कि मेरे पिताजी जो श्रीराम हैं, किस तरफ से आयेंगे। पर किसी तरफ से न आकर देखने के पश्चात् भी बच्चे पूर्णतः सुरक्षित थे। तत्काल बालक प्रहलाद का विश्वास बदल गया कि भगवान मेरे पिता नहीं अपितु कोई और हैं और किसी और की छाप बालक प्रहलाद के हृदय पर पड़ गयी। प्रहलाद ने अपने पिताजी को भगवान मानने से इन्कार कर दिया एवं सत्याग्रह करके अपने पिता का त्याग कर दिया। बेटे द्वारा किया गया त्याग देखकर हिरण्यकश्यप की गद्दी खतरे में पड़ गयी एवं अपनी गद्दी को बचाने के लिये बाप द्वारा बेटे को मरवाये जाने के भरसक प्रयास किये गये।

उपरोक्त प्रसंग से हमें यह शिक्षा मिलती है कि भगवान को प्राप्त करने के लिये यदि हमें अपने मां-बाप आश्रम आदि सही मार्ग का दर्शन नहीं कराते हैं तो उनका त्याग धर्मानुसार उचित है।

सबको बिसारो, पर गुरु को न बिसारो।
गुरु गोविन्द दोनों खड़े काके लागू पांव
बलिहारी गुरु आपणे
जिन गोविन्द दियो मिलाय।

राम और गुरु की गुत्थी एक पहेली है, जब तक हम इस गुत्थी को नहीं सुलझायेंगे तब तक यह निर्णय कर पाना कठिन है कि हमें राम व गुरु में किसको आगे रखना है। गुरु कोई भी हो सकता है, वस्तु, पत्थर, व्यक्ति, बालक आदि। जिस भी वस्तु-व्यक्ति से जीव को सत्य का बोध हो जावे, वह वस्तु, वह व्यक्ति उसके लिये गुरु हो सकता है। प्रहलाद के प्रसंग में नन्हीं बालिका गुरु का कार्य करती है। विश्वास बदल गया इसी बात को आगे समझाते हुए स्वामीजी ने महाभारत के प्रसंग का एक दृष्टांत सुनाया। युद्ध समाप्ति के निकट था। रात के समय पेड़ के नीचे कृपाचार्य व कृतवर्मा सो रहे थे। अश्वत्थामा अपने प्रण की वजह से काफी चिन्तित था। उसी समय उसने पेड़ पर एक बिलाव को जाते देखा और उस पर सोये हुये पक्षियों को मार कर उसने खा लिया। बिलाव के इस कृत्य से प्राप्त ज्ञान के आधार पर उसने भी रात के समय नींद में सोये हुये पांडव पुत्र समझ कर मार दिया एवं अपना प्रण पूर्ण होना मान लिया। यहां पर एक बिलाव जो जानवर था, अश्वत्थामा के लिये गुरु का कार्य करता है। स्वामीजी द्वारा दिया गया यह दृष्टान्त प्रसंग को तत्व से समझने के लिये मात्र संकेत है।

अति दुर्लभ है यह मनुष्य का जन्म

यह मनुष्य जन्म दुर्लभ है और यह अवसर दोबारा मिलना बहुत मुश्किल है। प्रभु-परमात्मा ने चौरासी लाख प्रकार के जीवों की सृष्टि करके केवल मनुष्य को ही यह श्रेष्ठता प्रदान की है कि वह मनुष्य जन्म पाकर ही इस मनुष्य जन्म में मालिक की सच्ची भक्ति करके स्वयं परमात्मा से मिलाप कर सकता है क्योंकि मनुष्य को छोड़कर चौरासी लाख प्रकार की जितनी भी योनियाँ है सब भोग-योनियाँ है। मनुष्य योनि की यह खूबी है कि यह भोग-योनि होने के साथ-साथ कर्म-योनि भी है। मनुष्य जन्म प्राप्त करके जीव अगर गुरु की सच्ची शरण लेकर परमात्मा की भक्ति करता है तो वह स्वयं परमात्मा का रूप बन जाता है। यह सौभाग्य अन्य किसी योनि को प्राप्त नही है। इसलिए देवी-देवता भी इसे प्राप्त करने के लिए तरसते हैं। दुर्लभ मनुष्य जन्म को पाने के लिए स्वर्ग में बैठे देवी-देवता परमात्मा से प्रार्थना करते रहते है क्योंकि उन्हें भी अगर परमात्मा से मिलाप करना है तो उन्हें भी मनुष्य जन्म में आकर गुरु की सच्ची शरण लेकर ही परमात्मा को पा सकते है। इसलिए संत कहते है कि मनुष्य जन्म दुर्लभ है और यह अवसर दोबारा मिलना बहुत मुश्किल है।

संकलित

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

जब आप दूसरों को सुखी करते हैं, तो स्वयं भी सुख का अनुभव करते हैं। फिर क्यों दूसरों को दुःखी करते हैं।

सद्गुरु की शरण पुर्नजन्म के बंधन से मुक्त करती है

वात्सल्यमूर्ति पूज्य गुरुवर स्वामी श्री भगत प्रकाश जी महाराज

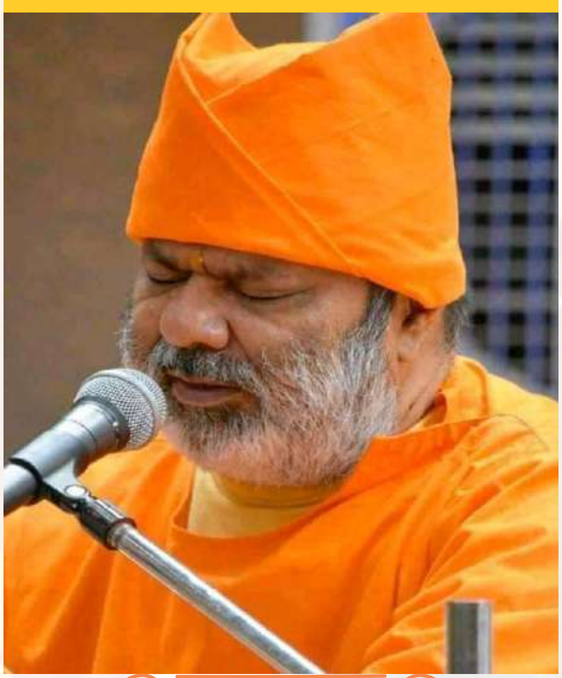

बोलो सनातन धर्म की जय, श्री राम कृष्ण भगवान की जय, श्री शंकर भगवान की जय, श्री लक्ष्मी नारायण भगवान की जय, जगदम्बे मैया की जय, सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की जय, सद्गुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज की जय, सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज की जय, सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज की जय, सर्व सन्तन की जय, प्रेम प्रकाश मण्डल की जय, अमरापुर दरबार की जय, गंगा मैया की जय।

निश्शोकमानं गतरागद्वेषं ज्ञानैकसूर्यं जगदेकवन्द्यम्
अध्यात्मलीनं विनिवृत्तकामं श्री टेऊंरामं शरणं प्रपद्ये

सर्वानन्द प्रदातारं सर्वानन्द विकासकम्
सर्वानन्दावितारं च श्री सर्वानन्दं नमाम्यहम्

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः

''जय गंगे जय गंगे
जय गंगे गोपाल भज मन जय गंगे।
जय गुरुदेव जय गुरुदेव
जय जय सतगुरुदेव भज मन जय गुरुदेव।।''
''श्री राम जय राम जय जय राम''

''दलपति एके श्वास को तीन लोक नही मोल
व्रथा काहिं गंवाइये ऐसो श्वास अमोल
सतगुरु के सत शब्द का सुमरन कर मन माहिं
कहे टेऊँ सो पाय पद काल कर्म जिंह नाहिं''

भजन–

''मिलाए शब्द सां सुरिती, करे अभ्यासु स्वासनि सां।
सभई फुरिना जगत जा तूं, निवारींदें अमरु थींदें
गुरूअ जो शब्दु सदा दम सां उचारींदें अमरु थींदें।
रखी गुर मूरत में नृती निहारींदें अमरु थींदें
शब्द जो अर्थु वीचारे, पसिजि तूं पाणखे प्यारे।
अन्दर में ध्यानु आतम जो विहारींदें अमरु थींदें
गुरूअ जो शब्दु सदा दम सां उचारींदें अमरु थींदें।
कहे टेऊं कटे बंधन, जगत खां तूं रही न्यारो।
ब्रह्म जे ज्ञान सां दिलि खे उजारींदें अमरु थींदें
गुरूअ जो शब्दु सदा दम सां उचारींदें अमरु थींदें।

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

हमारी प्रार्थना का 'सार–तत्त्व' क्या होना चाहिये ? मुक्ति।

"सुरति लगी गुरु शब्द में मन सुमरन के माहिं
कहे टेऊँ तिस दास को राम..
कहे टेऊँ तिस दास को यमपुर का दुख नाहिं"

रखी गुर मूरत में नृती निहारींदें अमरु थींदें
गुरूअ जो शब्दु सदा दम सां उचारींदें अमरु थींदें।।

प्रेम से बोलिए सत्नाम साक्षी , सत्नाम साक्षी

"दलपति एके श्वास को तीन लोक नही मोल"

तीनो लोकों की संपदा एक तरफ और एक स्वास जिसके द्वारा जप किया गया मन एकाग्र हुआ , उस एक स्वास की कीमत तीनों लोकों की संपत्ति से कई अधिक है तो उसको व्यर्थ ना गवाएं । यही उपदेश संत, महापुरुष अपनी अमृतमयी वाणी के द्वारा देते हैं कि मन को उनके चरणों में जोड़ दो । दुनिया के कार्य करने हैं, करते रहो लेकिन मन की वृति उनके चरणों में जुड़ी रहे तो मन के अंदर किसी अवगुण, विकार का प्रवेश नहीं होगा । नाम अगर हृदय में चलता रहेगा तो बाहर के दुर्गुण, विकार अंदर आएंगे नहीं उनसे रक्षा हो जाएगी यही गुरु महाराज जी अपनी अमृतमयी वाणी में फरमाते हैं

गुरूअ जो शब्दु सदा दम सां उचारींदें अमरु थींदें।।

तुम्हारे पास जो सम्पत्ति है स्वासों की वो बहुत बड़ी सम्पत्ति है । तुम कंगाल और गरीब नहीं, दरिद्र नहीं शाहों के शाह हो । अगर उन स्वासों को तुमने सफल किया तो उन स्वासों के द्वारा उस अतुलित धन की तुम्हें प्राप्ति होगी जो कभी भी खर्चने से खुटने वाला नहीं, कभी भी समाप्त होने वाला नहीं तो यही बाणी गुरु महाराज जी की सत संदेश देती है और यही संतों की वाणी बताती है

"पाणीय मथे झूपड़ा मूरख उञ मरन
पाणीय मथे झूपड़ा मूरख उञ मरन
स्वांसां ओडो सुपिरीं लोचे तां न लहन
दम न सुञाणीन दाहूँ कन मुठन जीयां, राम।।"

"पाणीय मथे झूपड़ा मूरख उञ मरन

तो अंतर में अनंत अमृत की राशि है उसके बाद भी उस मृत्यु से भय, संसार के विषय विकारों में मन फसा हुआ है लेकिन नाम के अमृत का जब पान हो जाएगा तो उस विष से हमेशा के लिए ये मन हट जाएगा तो आज आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज उनकी पुण्यतिथि प्रारंभ हो रही है उसका पांच दिवसीय उत्सव आज से प्रारम्भ हो रहा है तो वो संत, महापुरुष शरीर करके भले ही अदृश्य हों लेकिन वो अदृश्य नहीं वो हमेशा ही हृदय के अंदर विराजमान हैं उन भक्तों के जो निरंतर उनका जाप करते हैं, निरन्तर उनका ध्यान करते हैं तो अमर पदवी को वो प्राप्त करके, हमेशा अमर रह के इस संसार में अपने जिज्ञासुओं का उद्धार करते रहते हैं। जहां जहां प्रेमी उन्हें पुकारते हैं, उनके दुख दर्द, संकट सभी वो दूर करते हैं तो ऐसी उनकी अमृतमयी वाणी को हम पढ़ें अगर हम भी अपने मन में शांति, आनंद की प्राप्ति करना चाहें तो उसके लिए मार्ग उन्होंने बता दिया है।

"महाजनो येन गतः स पंथा"

जिस मार्ग पर वो चले उसी मार्ग पर हम भी चलें अमृतमय वाणी प्रेम प्रकाश ग्रंथ में गुरु महाराज जी सत उपदेश देते हैं

"कहे टेऊं चलिजि चारो ,
सचनि संतनि गुरनि वारो ,
हकीकत जो हणी नारो ,
निसंगु थीउ तूं ,निसंगु थीउ तूं

करे संगु शेर मड़िदनि जो
निसंगु थीउ तूं ,निसंगु थीउ तूं

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

अपने स्वास भगवत भजन में व शरीर परोपकार व धर्म में लगा लो।
क्योंकि काल के द्वारा वैसे ही एक न एक दिन मारे जाओगे।

''कहे टेऊं चलिजि चारो ,सचनि संतनि गुरनि वारो

तो उनका जो जीवन है उसी के अनुसार हम भी अपना जीवन बनाएं

''निसंगु थीउ तूं , निसंगु थीउ तूं''

रहते हुए भी संसार में अपने मन को उन्होंने अलग किया

''रहियो राज़ में पर वैरागी बणी
कमल गुल जियां न्यारो ऐं त्यागी बणी''

तो संग माना आसक्ति, मन के विचार जो उनसे जुड़े हुए हैं संसार से उन विचारों को वहां से हटा के ईश्वर, परमात्मा, सद्गुरु के चरणों में जोड़े तो उन्होंने आकर के सत्य का उपदेश दिया अमर धाम अपने शिष्यों को भी पहुंचा दिया जिन्होंने उनकी शरण ली तो स्वामी गुरुमुख दास जी महाराज जी ने अपनी अमृतमयी वाणी में उनकी महिमा का गुणगान किया है

''धाम अमरापुरी का बनाए गए
पंथ प्रेम प्रकाशी चलाये गए
प्रेम सबसे करा मन सबका हरा
वो तो प्रेम रूप अविनाशी था
मेरा सत्गुरु प्रेम प्रकाशी था

वो तो अमरापुर का वासी था
मेरा सत्गुरु प्रेम प्रकाशी था

जाप सत्नाम साक्षी जपाये गए
पाप जन्म जन्म के मिटाये गए
भव तार गए दुख टार गए

वो तो दुख भंजन सुखरासी था
मेरा सत्गुरु प्रेम प्रकाशी था

जो श्रद्धालु आके शरण पड़ा
हाथ किरपा का गुरूदेव तां पर धरा
भक्ति दीनी उसे मुक्ति दीनी उसे
वो तो मेटत जूण चौरासी था

मेरा सत्गुरु प्रेम प्रकाशी था
वो तो अमरापुर का वासी था

कहे गुरुमुख गुरु था वो ज्ञानी बड़ा
सर्व दानियों में सत्गुरु था दानी बड़ा
दे के ज्ञान अभय नित करते निर्भय
वो तो काटत जम की फांसी था

मेरा सत्गुरु प्रेम प्रकाशी था, वो तो अमरापुर का वासी था
वो तो अमरापुर का वासी था, मेरा सत्गुरु प्रेम प्रकाशी था''

''अमर देश से आगमन अमर देश प्रस्थान''

तो कुछ प्राणी संसार में आके फिर जन्म लेते हैं और कुछ फिर से जन्म नहीं लेते जिनका पुनर्जन्म नहीं होता ।

''यदगत्वा न निवर्तन्ते''

वहां जाकर के परम शांति, परम धाम को वो प्राप्त करते हैं ऐसे जो गुरु की शरण लेते हैं सद्गुरु का आधार लेते हैं उनको फिर से जन्म लेना नहीं पड़ता है । ऐसी गुरु कृपा होती है तो उन्होंने स्वयं भी अमर पद्वी को प्राप्त किया । शरण में आये भक्तों को भी वही मार्ग उन्होंने बताया । उनके बताए हुए मार्ग पर चलेंगे तो हमारा भी कल्याण होगा । प्रार्थना करें, आशीष मांगें ।।

''तुम ही सत्गुरु तुम पितु माता
तुम ही हरि हर तुम ही विधाता
हम हैं भिखारी तुम हो दाता
बार-बार लख बार नमामि
जय जय जय टेऊँराम स्वामी
कृपा करो प्रभु अन्तर्यामी
दया करो प्रभु अन्तर्यामी ''

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश अपने-अपने धर्म में रहना चाहिये । अपना धर्म ही सुखदाई है ।

शिवरात्रि पर शंकर जी ने लिया रुद्रावतार

मृत्यु से कौन भाग सकता है. मृत्यु ही जीवन का सत्य है. जीवन तो पानी के बुलबुले की तरह है. जीवन को सबने देखा कहां? मृत्यु को ऐसा कौन जीव है, जिसने भोगा नहीं. जीवन भोगिता है, मृत्यु उस भोग का प्रसाद. भगवान शंकर के साकार और निराकार दोनों स्वरूपों को ध्यान से विचारिए. आपको जीवन और मृत्यु का अंतर पता लग जाएगा. सावन में वह जगत के कल्याण के लिए विवाह रचाते हैं. उनके पुत्र कार्तिकेय उस तारकासुर का अंत करते हैं, जिसने ब्रह्माजी से वरदान लिया था कि मैं मरूं तो केवल शंकर जी के शुक्र से उत्पन्न संतान के हाथों. क्या चालाक था तारकासुर? उसने सोचा कि न शंकर जी विवाह रचाएंगे और न उनका पुत्र होगा अर्थात् उसकी मौत तो कभी आएगी ही नहीं.

मैं नाम रूप से न्यारा नहीं, परंतु मेरा नाम शिव है और रूप ज्योतिर्बिन्दु है. मैं सूर्य, चन्द्र, तारायण से पार परमधाम निवासी हूं, जो कि आप सभी आत्माओं का भी निवास स्थान है. मैं ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर का भी रचयिता, त्रिमूर्ति हूं. इन तीनों सूक्ष्म देवताओं द्वारा स्थापना, पालन और विनाश का कार्य करता हूं. सृष्टि एक नाटक है, जिसमें आप सभी कलाकार हैं. यह सृष्टि चक्र, ५००००० वर्ष का है. सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, और कलियुग ये चार युग हैं. अब कलियुग समाप्त होकर सतयुग आने वाला है. यह कलियुग और सतयुग का संधिकाल चल रहा है. इस पुरुषोत्तम संगमयुग में तुम सब मेरे सतयुगी दैवी स्वराज्य प्राप्त कर सकते हो. याद रखो, अब नहीं तो फिर कभी नहीं.

उसको क्या पता था कि जगत के रचने वाले ने हर जीव को जीवन दान देने के साथ ही उसकी आयु भी तय कर दी है. सावन में मदमस्त भोले भंडारी फाल्गुन आते-आते त्र्यंबकम हो जाते हैं. त्रिपुरारी, प्रलय और काल के देवता. क्यों? शंकरजी अनुशासन और शासन के प्रतीक हैं. अनुशासन की भी कुछ शर्तें होती हैं और शासन की भी. प्रकृति का संतुलन इसी में है कि समय से जीव आए और आयु पूरी होने पर चला जाए. यदि वह विधान न हो, तो प्रकृति का संतुलन गड़बड़ा जाएगा. संसाधनो का अकाल पड़ जाएगा. हरेक अपने को कालजयी मान लेगा. फिर क्या होगा? चारों और त्राहिमाम्-त्राहिमाम्. हाहाकार.

फाल्गुन मास की त्रयोदशी वास्तविक अर्थों में मृत्यु को याद करने का पर्व है. मृत्यु तो आनी है-अवश्य आनी है, लेकिन इसको अपने कर्मों से सुन्दर बनाया जा सकता है. मृत्यु की कामना करना गलत है. आत्महंता बनना और भी गलत. लेकिन मृत्यु को याद करते रहना अशास्त्रीय नहीं है. शंकर जी इसी का तो अनुभास कराते हैं. इस शिवरात्रि पर वह त्रिपुरारी बनकर आते हैं. कथा तो केवल इतनी है कि शंकर जी ने शिवरात्रि पर अपने त्रिनेत्रों का दर्शन कराया था. देवी सती जब अपने पिता दक्ष के यहां योगाग्नि से सती हो गईं, तो शंकर जी ने वहाँ ताँडव किया. शिव पुराण की कथा भी इसी के साथ जुड़ती है. इसी शिवरात्रि को शंकर जी ने रुद्रावतार लिया था.

एक बार ब्रह्मा, विष्णु और महेश में बहस हो गई कि कौन बड़ा? ब्रह्मा जी ने सृष्टिसर्जक होने, विष्णु जी ने जगत का पालन करने और महेश जी ने कल्याण करने के तर्क दिए.

तभी एक ज्योति प्रकट हुई. चारों ओर का अंधकार मानो मिट गया. वह ज्योति रुद्र की थी. रुद्र ने कहा- सबको नचाने वाला तो मैं हूँ. मैं ही त्र्यंबक हूँ. मैं ही सृष्टि को चलाता हूँ और मेरे ही आदेश पर सृष्टि का अंत होता है. यह निराकार रूप है. यही परमेश्वर. साकार और निराकार भक्ति का यही अंतर है. साकार भक्ति दृष्टि का प्रतीक है और निराकार भक्ति अनुभव और आभास का प्रतीक. जीवन साकार है और मृत्यु निराकार.

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

प्रतिदिन प्रात: काल को उठकर भगवान के आभार मानें कि उसने आपको आज नया जन्म दिया है। मन में संकल्प करें कि आज कोई भी पाप-कर्म नहीं करूँगा और शुभ कर्म ही करूँगा।

भक्ति कब प्राप्त होती है

श्री अयोध्या जी में एक उच्च कोटि के संत रहते थे, इन्हें रामायण का श्रवण करने का व्यसन था। जहां भी कथा चलती वहाँ बड़े प्रेम से कथा सुनते, कभी किसी प्रेमी अथवा संत से कथा कहने की विनती करते। एक दिन राम कथा सुनाने वाला कोई मिला नहीं। वही पास से एक पंडित जी रामायण की पोथी लेकर जा रहे थे। पंडित जी ने संत को प्रणाम् किया और पूछा की महाराज ! क्या सेवा करे ?

संत ने कहा, पंडित जी, रामायण की कथा सुना दो परंतु हमारे पास दक्षिणा देने के लिए रुपया नहीं है, हम तो फक्कड़ साधु है। माला, लंगोटी और कमंडल के अलावा कुछ है नहीं और कथा भी एकांत में सुनने का मन है हमारा। पंडित जी ने कहा, ठीक है महाराज, संत और कथा सुनाने वाले पंडित जी दोनों सरयू जी के किनारे कुंजो में जा बैठे। पंडित जी और संत रोज सही समय पर आकर वहाँ विराजते और कथा चलती रहती।

संत बड़े प्रेम से कथा श्रवण करते थे और भाव विभोर होकर कभी नृत्य करने लगते तो कभी रोने लगते। जब कथा समाप्त हुई तब संत ने पंडित जी से कहा, पंडित जी.. आपने बहुत अच्छी कथा सुनायी। हम बहुत प्रसन्न है, हमारे पास दक्षिणा देने के लिए रूपया तो नहीं है परंतु आज आपको जो चाहिए वह आप मांगो। संत सिद्ध कोटि के प्रेमी थे, श्री सीताराम जी उनसे संवाद भी किया करते थे।

पंडित जी बोले, महाराज हम बहुत गरीब है, हमें बहुत सारा धन मिल जाये। संत ने प्रार्थना की कि प्रभु इसे कृपा कर के धन दे दीजिये। भगवान् ने मुस्कुरा दिया.. संत बोले.. तथास्तु..

फिर संत ने पूछा, मांगो और क्या चाहते हो ? पंडित जी बोले, हमारे घर पुत्र का जन्म हो जाए। संत ने पुनः प्रार्थना की और श्रीराम जी मुस्कुरा दिए। संत बोले, तथास्तु, तुम्हे बहुत अच्छा ज्ञानी पुत्र होगा।

फिर संत बोले और कुछ माँगना है तो मांग लो। पंडित जी बोले, श्री सीताराम जी की अखंड भक्ति, प्रेम हमें प्राप्त हो।

संत बोले, नहीं ! यह नहीं मिलेगा। पंडित जी आश्चर्य में पड़ गए की महात्मा क्या बोल गए। पंडित जी ने पूछा, संत भगवान् ! यह बात समझ नहीं आयी।

संत बोले, तुम्हारे मन में प्रथम प्राथमिकता धन, सम्मान, घर की है। दूसरी प्राथमिकता पुत्र की है और अंतिम प्राथमिकता भगवान् की भक्ति की है।

जब तक हम संसार को, परिवार, धन, पुत्र आदि को प्राथमिकता देते है तब तक भक्ति नहीं मिलती।
भगवान् ने जब केवट से पूछा की तुम्हे क्या चाहिए ? केवट ने कुछ नहीं माँगा।

प्रभु ने पूछा, तुम्हे बहुत सा धन देते है, केवट बोला नहीं..

प्रभु ने कहा, ध्रुव पद ले लो, केवट बोला, नहीं.. इंद्र पद, पृथ्वी का राजा, और मोक्ष तक देने की बात की परंतु केवट ने कुछ नहीं लिया तब जाकर प्रभु ने उसे भक्ति प्रदान की।

हनुमान जी को जानकी माता ने अनेकों वरदान दिए, बल, बुद्धि, सिद्धि, अमरत्व आदि परंतु उन्हे प्रसन्नता नहीं हुई। अंत में जानकी जी ने श्री राम जी का प्रेम, अखंड भक्ति का वर दिया।

प्रह्लाद जी ने भी कहा की हमारे मन में मांगने की कभी कोई इच्छा ही न उत्पन्न हो तब भगवान् ने अखंड भक्ति प्रदान की। जय श्री सीताराम

सद्गुरू हरिदासराम वचनावली

मरता तो शरीर है आत्मा नहीं। वह तो स्वयं ज्ञान स्वरूप है।

प्रेम तत्व

(पूज्यपाद स्वामी रामसुखदासजी महाराज)

हम लोगों ने यह समझ रखा है कि जैसे हम लोगों में स्त्री-पुरूष का संबंध है, वैसे ही भगवान श्री कृष्ण और श्रीराधा में संबंध है। पर ऐसी बात नहीं है। श्रीकृष्ण और राधा का जो प्रेम है, वह एक विलक्षण तत्व है। इसमें भी श्रीराधा प्रेम-तत्व है। जिस तरह लोभी मनुष्य के सामने एक तो होता है धन, और एक होता है धन की तरफ खिंचाव, धन प्रिय लगता है, धन में खिंचाव होता है तो इसको लोभ कहते हैं। इसी तरह एक तो हैं भगवान और एक है भगवान की तरफ खिंचाव। भगवान में जो खिंचाव है, वह श्रीराधा-तत्व है और जिसमें वह खिंचाव होता है, वह श्रीकृष्ण -तत्व है। लोभ में तो केवल मनुष्य का ही धन में खिंचाव होता है, धन का मनुष्य में खिंचना नहीं होता। परन्तु प्रेम में भगवान श्रीकृष्ण का श्रीराधाजी में और श्रीराधाजी का भगवान श्रीकृष्ण में परस्पर खिंचाव होता है।

सामान्य स्त्री-पुरूष का जो खिंचाव होता है, उसमें और श्रीराधाकृष्ण के खिंचाव में बड़ा भारी अन्तर है। स्त्री-पुरूष का खिंचाव तो अपने सुख के लिये होना है, पर **श्रीराधाजी और भगवान श्रीकृष्ण का खिंचाव एक-दूसरे को सुख देने के लिये होता है, निज सुख के लिये नहीं।** जहाँ निज सुख का भाव होता है, वहाँ राग होता है, कामना होती है, जो फँसाने वाली है।

थोड़े अंश में यह बात ऐसे समझ सकते हैं कि जैसे माँ का बालक में खिंचाव होता है और बालक का भी माँ में खिंचाव होता है। बालक तो अपने लिये ही माँ को चाहता है, क्योंकि वह समझता ही नहीं कि माँ का हित किसमें है। परन्तु माँ केवल अपने लिये ही बालक को नहीं चाहती, वह बालक का हित भी चाहती है। परन्तु ऐसा होने पर भी माँ की ऐसी इच्छा रहती है कि बालक बड़ा हो जायेगा तो उसका ब्याह करूँगी, बहू आयेगी, सेवा करेगी, पोता होगी आदि। ऐसी उसके भीतर भविष्य के सुख की आशा रहती है, चाहे वह इस बात को अभी स्पष्ट जाने या न जाने। परन्तु भगवान और श्रीराधाजी में ऐसा भाव नहीं रहता कि भविष्य में सुख होगा। उनको तो एक-दूसरे को सुखी देखने मात्र से सुख होता है। अब इस सुख को कैसे बतायें ? संसार में ऐसा कोई सुख है ही नहीं। संसार में हमारा जो आकर्षण होता है, वह आकर्षण शुद्ध नहीं है, पवित्र नहीं है, क्योंकि वह अपने सुख के लिये, अपने स्वार्थ के लिये होता है।

किसी भूखे आदमी का अन्न में खिंचाव होता है तो इसमें दो बातें होती है-एक तो वह भोजन करेगा तो भोजन के पदार्थों का नाश करेगा, और दूसरे वह भोजन के अधीन होगा अर्थात् परतंत्र होगा, कारण कि वह भोजन की जरूरत मानेगा और मनुष्य जिसकी जरूरत मानता है, उसकी परतन्त्रता हो ही जाती है। धन चाहते हैं तो धन की परतन्त्रता, कुटुम्ब चाहते है तो कुटुम्ब की परतन्त्रता, शरीर

सद्गुरू टेऊँराम अमृतोपदेश अपने गुरू में शिष्य की प्रीति, प्रेम, श्रद्धा व विश्वास होना चाहिए।

रखना चाहते हैं तो शरीर की परतन्त्रता हो जाती है। चाहने वाला स्वयं तुच्छ हो जाता है और जिसको चाहता है, उसको बड़ा मान लेता है। संसार को बड़ा मानकर उसका तो नाश करता है और स्वयं उसका गुलाम बन जाता है और अपना पतन कर लेता है।

भगवान और श्रीराधाजी के संबंध में उपर्युक्त दोनों ही बातें नहीं हैं। श्रीराधाजी भगवान की तरफ खिंचती है, जिससे भगवान को आनन्द हो और भगवान श्रीराधाजी की तरफ खिंचते है जिससे श्रीराधाजी को आनन्द हो। एक-दूसरे के प्रति ऐसा भाव होने से एक-एक का प्रेम बढ़ता है। जहाँ सुख लेने की इच्छा होती है, वहाँ वैसा प्रेम हो ही नहीं सकता। प्रेम उसे कहते हैं, जो बढ़ता ही रहे, जिसमें मिलने की उत्कण्ठा बढ़ती ही रहे। श्यामसुन्दर और श्रीराधाजी सदा मिले ही रहते हैं, पर ऐसा लगता है कि मानो कभी मिले ही नहीं, आज ही नया मिलन हुआ है - **'अरबरात मिलिबे को निसिदिन, मिलेइ रहत मनु कबहुँ मिले ना।'**

भगवान श्रीकृष्ण स्वयं ही दो रूप से हो गये- अपने आधे अंग से श्रीराधाजी बन गये और आधे अंग से श्रीकृष्ण बन गये। इस प्रकार एक भगवान ही दोनों स्वरूप बने हैं। वे पहले भी एक हैं और पीछे भी एक हैं, केवल **प्रेम का आदान-प्रदान करने के लिये और दूसरों को प्रेम का आस्वादान कराने के लिये ही वे दो रूप बने हैं।** दो रूप बनकर वे एक-दूसरे को सुख देने के लिये एक-एक की तरफ खिंचते हैं। वह सुख कैसा ? **'प्रतिक्षणवर्धमानम्'** प्रतिक्षण बढ़ता ही रहता है। सांसारिक सुख का भोग होता है, वह कभी एकरूप नहीं रहता, घटता ही रहता है और घटते-घटते सर्वथा मिट जाता है। संसार का कोई भी सुख हो, कहीं भी हो, जिस किसी में हमारी रूचि होती है, हम सुख लेते हैं तो पहले सुख की इच्छा प्रबल होती है, फिर कम हो जाती है। उसका सेवन करते-करते फिर सुख की इच्छा नहीं रहती। इतना ही नहीं, उस सुख से ग्लानि हो जाती है। अतः संसार का कोई सुख ऐसा नहीं है, जो निरन्तर सुख दे सके। पर भगवान का सुख ऐसा विलक्षण है कि वह निरन्तर बढ़ता ही रहता है, उसकी कभी तृप्ति नहीं होती।

संसार का सुख प्रतिक्षण नष्ट होता है, पर श्रीराधाजी और भगवान श्रीकृष्ण का प्रेम प्रतिक्षण बढ़ता रहता है। वह किस रीति से बढ़ता है ? इस रीति से बढ़ता है कि मिले रहते हुए भी मानो कभी मिले ही नहीं। जिसको अत्यंत भूख होती है, उसको अन्न न मिलने की एक उत्कण्ठा रहती है कि अन्न मिल जाय। लोभी व्यक्ति को धन न मिले तो धन मिल जाये-ऐसा एक खिंचाव होता है और धन मिलने पर खिंचाव कम हो जाता है। परन्तु जब श्रीराधाजी और भगवान श्रीकृष्ण का मिलन होता है, तो मिलन होने पर भी खिंचाव बढ़ता रहता है।

सन्तों की वाणी में आया है-**'लाल प्रिया में भई न चिन्हारी'** लाल और प्रिया में अर्थात् भगवान श्रीकृष्ण और श्रीराधाजी में अभी तक पहचान ही नहीं हुई कि तुम कौन हो ! जब तक धन नहीं मिलता, तब तक धन की पहचान नहीं होती। परन्तु प्रेम में मिलन होने पर भी पहचान नहीं होती और फिर मिलें, फिर मिलें-यह उत्कण्ठा रहती है। इस कारण प्रेम का आनन्द ज्ञान के आनन्द से भी विलक्षण है। सब जगह एक सच्चिदानन्दघन परमात्मा परिपूर्ण है, ऐसे परमात्मतत्व में स्थिर होने पर एक अखण्ड आनन्द रहता है। वह आनन्द भी किञ्चित्मात्र भी घटता नहीं। अनन्त ब्रह्मा उत्पन्न हो होकर समाप्त हो जायें, तो भी वह ज्यों का त्यों रहता है। परन्तु प्रेम का आनन्द प्रतिक्षण बढ़ता ही रहता है। सन्तों ने कहा है कि चन्द्रमा की कला बढ़ती है और बढ़ते-बढ़ते पूर्णिमा आ जाती है, पर प्रेम के आनन्द में कभी पूर्णिमा आती ही नहीं-

प्रेम सदा बढ़िबौ करै, ज्यों ससिकला सुबेष।
पै पूनो यामें नहीं, ताते कबहुँ न सेप॥

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश पुरूषार्थ ही दैव है इसलिए पुरूषार्थ करो। पुरूषार्थी की जय है।

ऐसा जो प्रतिक्षण वर्धमान प्रेम है भगवान के प्रति खिंचाव है उसका नाम है–श्रीराधा।

यों तो पहले श्रीकृष्णजन्माष्टमी आती है और पीछे राधाष्टमी आती है, पर पहले वर्ष में श्री राधाजी प्रकट होती हैं और दूसरे वर्ष में भगवान श्रीकृष्ण प्रकट होते है। इस कारण श्री राधाजी साढ़े ग्यारह महीने बड़ी हैं और पीछे अवतार लेने से भगवान श्रीकृष्ण छोटे हैं। तात्पर्य यह हुआ कि पहले भगवान का खिंचाव होता है और पीछे भगवान प्रकट होते हैं। भक्त लोग भी पहले नाम-जप करते हैं, कीर्तन करते हैं और पीछे उनकी उत्कण्ठा होती है। ऐसे ही सत्संग करते-करते सत्संग में एक रस पैदा होता है, सत्संग में खिंचाव होता है, वह भी बढ़ता रहता है।सुबह इतनी जल्दी और वर्षा में भी लोग सत्संग के लिये इकट्ठे हो जाते हैं, यह क्या है ? यह उनका सत्संग में खिंचाव है। सत्संग की बातें प्रिय लगती हैं और बार-बार खिंचाव होता है। इससे आगे चलकर प्रेम की प्राप्ति होती है। इसीलिये पहले श्री राधाजी प्रकट होती हैं और फिर भगवान श्रीकृष्ण प्रकट होते हैं। रामायण में आया है-

हरि व्यापक सर्वत्र समाना।
प्रेम ते प्रगट होहिं मैं जाना।।
(मानस १। १८४। ३)

देवताओं सहित ब्रह्माजी आपस में विचार करते हैं कि भगवान कहाँ मिलेंगे तो कोई कहते हैं कि भगवान क्षीरसागर में मिलेंगे, कोई कहते हैं कि गोलोक में मिलेंगे और कोई कहते हैं कि वैकुण्ठ में मिलेंगे। पार्वतीजी को रामायण सुनाते हुए भगवान शंकर कहते हैं कि उस सभा में मैं भी था, तो मैंने यह कहा कि भगवान श्रीहरि किसी एक जगह ही रहते हों, यह बात नहीं है। वे तो सब जगह समान रूप से मौजूद हैं, पर प्रेम होने पर ही प्रकट होते हैं। फिर कहा–

अग जगमय सब रहित बिरागी।
प्रेम तें प्रभु प्रगटइ जिमि आगी।।
(मानस १। १८४। ४)

जैसे दियासलाई-घर्षण करते ही अग्नि प्रकट हो जाती है। दियासलाई में अग्नि तो पहले भी थी। पहले नहीं होती तो प्रकट कैसे होती ? अतः दियासलाई में अग्नि है, पर प्रकट नहीं है। ऐसे ही भगवान सब जगह हैं और परिपूर्ण हैं, पर वे प्रकट नहीं है। वे प्रकट कब होते हैं ? जैसे दियासलाई को रगड़ लगती है तो उससे अग्नि प्रकट हो जाती है, ऐसे ही जब प्रेमरूप रगड़ लगती है अर्थात् भगवान का चिन्तन करते-करते प्रेम हो जाता है, तो उससे भगवान प्रकट हो जाते है।

ईश्वर की दृष्टि सदैव तुम्हारे ऊपर रहती है

प्रज्ञाचक्षु स्वामी शरणानन्द महाराज जन्म से ही नेत्र विहीन थे, वे भगवान श्रीकृष्ण के परम भक्त थे, इन्होने मानव-सेवा-संघ की स्थापना कर समाज के भूले-भटके युवकों को सही दिशा प्रदान की थी। एक दिन उन्होंने अपने शिष्यों से वृन्दावन में श्री बांकेबिहारी जी के दर्शन कराने की इच्छा प्रकट की। शिष्य उनकी इच्छा पूर्ण करने के लिये श्री बिहारी जी के मन्दिर में पहुँच गये। मंदिर के प्रांगण में भारी भीड़ थी। उसी भीड़ के बीच से झुंझलाहट भरे स्वर में कोई व्यक्ति चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा था, अन्धे आदमी को यहाँ आने की क्या आवश्यकता थी, जबकि वह भगवान को देख नहीं सकता, दूसरे ने कहाँ, इसने यहाँ आकर भीड़ ही बढ़ाई है, तीसरे ने कहाँ, अच्छा होता यदि ये अपने घर पर ही रहते। इतना सुनकर स्वामी जी का हृद्‌य चीत्कार कर उठा। वे कहने लगे, आप सत्य कह रहे हैं, मैं अन्धा ही हूँ, परंतु मेरा भगवान तो अन्धा नहीं है, वह निश्चय ही मुझे देख रहा है। मेरे प्रिय बच्चों, भगवान के प्रति श्रद्धा होनी चाहिये, वह सर्वज्ञ है। वह पल-प्रतिपल तुम्हारें भावों से परिचित रहता है। संत के मुख से ऐसे प्रिय वचन सुनकर वे युवक उनके चरणों में गिर पड़े और अपने वचनों के प्रति क्षमा याचना करने लगे।

संकलित

सद्‌गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी
माया की नींद से जाग्रत होकर भगवान को याद करें, जिसने आपको मानव जीवन का स्वर्ण अवसर दिया है।

धर्मावतार भगवान श्री झूलेलाल

चेटीचण्ड 20 मार्च 2026 पर विशेष

हमारे धर्मप्राण भारतवर्ष में परम्परानुगत अनेक पर्व, उत्सव, त्यौहार आदि बड़े हर्षोत्साह के साथ मनाये जाते हैं. प्रत्येक पर्व के पीछे उसकी एक पृष्ठभूमि या इतिहास होता है, जिसके अन्तर्गत उस पर्व-उत्सव को मनाया जाता है. प्रत्येक कौम अपने धर्म के अनुसार स्वयं का पर्व बड़े श्रद्धा, आस्था, उत्साह, उमंग के साथ मनाती है. इसी प्रकार सिन्धी समुदाय का भी एक मुख्य महापर्व है-चेटीचण्ड! जो कि पूरे देश-दुनिया में बड़े जोर- शोर, श्रद्धा भावना, उल्लासोमंग के साथ मनाया जाता है.

इस महापर्व के इष्टदेव हैं वरुणावतार भगवान श्री झूलेलाल! जिन्हें जिन्दहपीर, लालसांई, अमरलाल, उडेरोलाल के नाम से भी जाना जाता है.

चेटीचण्ड विक्रम संवत् का पवित्र शुभारम्भ दिवस है. 'चेटीचण्ड' में 'चेटी=चैत्रमास' अर्थात् नव सम्वत्सर का आरंभ! 'चण्ड=चन्द्रतिथि' इस दिन सिन्धी समाज के लोग अपने इष्टदेव भगवान श्री झूलेलाल की आराधना पूजा-अर्चना श्रद्धा-भावना के साथ करके अपनी आस्था का अर्घ्य चढ़ाकर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं. इस दिन सिन्धी समाज के लोग प्रसन्नचित्त होकर 'आयोलाल-झूलेलाल' का उद्घोष कर एक दूसरे को भगवान झूलेलाल अवतरण एवं नववर्ष की बधाईयाँ देते हैं. आईए इस चेटीचण्ड महापर्व की पृष्ठभूमि/इतिहास की ओर चलें.

भगवान की घोषणा के अनुसार जब-जब धर्म का ह्रास होने लगता है, अधर्म और पाप बढ़ जाता है, तब-तब प्रभु स्वयं किसी न किसी रूप में अवतार लेकर पापियों का नाश कर धर्म की रक्षा करते हैं. इसी प्रकार सिन्ध प्रदेश के ठट्ठा नामक नगर में एक अत्याचारी मिरख बादशाह नामक शासक का राज्य था. वह हिन्दुओं के प्रति अतिक्रूर था. सलाहकारों द्वारा मतिभ्रष्ट होने के कारण वह हिन्दुओं को मुसलमान बनाना चाहता था. उसने अपने राज्य में घोषणा करवा दी कि यदि हिन्दू लोग मुसलमान नहीं बनेंगे तो उन्हें सख्त सजा दी जावेगी. इस दृष्टिकोण से हिन्दुओं पर कई प्रकार के अत्याचार किये जाने लगे, यहाँ तक कि हिन्दू धर्म की निशानी शिखा काटकर जनेऊ उतरवाये जाने लगे. हिन्दू धर्म को नष्ट कर स्वयं के धर्म में मिलाने का प्रयास किया जाने लगा.

शास्त्र कहते हैं कि अपने धर्म से कभी भी च्युत नहीं होना चाहिए. अपना धर्म ही सर्वश्रेष्ठ है.

धर्म अपने मांहि हरदम प्यार कर नटना नहीं।
सीस जावे जान दे पर, धर्म से हटना नहीं।।

अपने धर्म में स्थित रहने पर जान भी गँवानी पड़े तो घबराना नहीं चाहिए.

अत्याचारों से पीड़ित हिन्दू त्राहिमाम कर उठे. अंत में हिन्दू लोग सिन्धु नदी के पावन तट पर आये और लगातार तीन दिनों तक ध्यान लगाकर वरुण देवता की पूजा-अर्चना व स्तुति करने लगे. तब करुणा भरी पुकार भगवान ने सुनी एवं आकाश की गर्जनाओं के साथ आकाशवाणी हुई- हिन्दुओं! तुम लोग निर्भय एवं निश्चिन्त हो जाओ. मिरख बादशाह तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर सकेगा. मैं शीघ्र ही तुम्हारी रक्षार्थ नसरपुर में भक्त रतनराय के घर माता देवकी के गर्भ से जन्म लूँगा.

यह आकाशवाणी सुनकर सभी हिन्दू गद्गद् हो उठे और भगवान की जय-जयकार करते घर लौट आये. समय अनुसार विक्रम सम्वत् १००७, चैत्र के महीने शुक्रवार के शुभ दिन सायंकाल के समय प्रभु परमात्मा ने भक्त रतनराय के घर माता देवकी के गर्भ से सुन्दर बालक के रूप में जन्म लिया, जिनका नामकरण उदयचन्द के रूप में किया गया. सिन्ध प्रदेश के नागरिकों को जब मालूम पड़ा तो वे हृदय में हर्ष विभोर होकर झूमने लगे. इन्द्र देवता भी प्रभु परमात्मा के अवतरित होने की खुशी में नन्हीं नन्हीं बूंदों के रूप में पुष्पों की वर्षा करने लगे. समय की प्रबलता के साथ-साथ उदयचन्द बाल लीला कर बड़े होने लगे. उनकी अद्भुत लीलाएँ दिन-प्रतिदिन पूरे सिन्ध प्रदेश के घर-घर में चर्चित हो रही थीं.

धीरे-धीरे इस तेजस्वी बालक की बात मिरख बादशाह के कानों तक पहुँची एवं वह नित्य प्रति भयानक सपने देखने लगा. अब हिन्दुओं को विश्वास हो गया कि स्वयं भगवान उनके रक्षक बनकर भू-लोक पर अवतरित हुए

सद्गुरू हरिदासराम वचनावली

अहंकार को समाप्त किये बिना शान्ति सम्भव नहीं।

हैं. समय-समय पर भगवान झूलेलाल की अलौकिक लीलाओं को देखकर मिरख बादशाह भयभीत हो गया और हार मानकर स्वयं भगवान झूलेलाल की शरण में आ गया.

तब भगवान श्री झूलेलालजी ने बादशाह को समझाया कि सारी सृष्टि प्रभु ने उत्पन्न की है. हिन्दू-मुसलमान एक ही हैं. मुसलमान जिसे खुदा कहते हैं, हिन्दू उसे ईश्वर कहते हैं. अर्थात् मंजिल सभी की एक ही है. अब बादशाह की समझ में सब कुछ आ गया. इस प्रकार अधर्म समाप्त होकर धर्म की जय हुई.

सन् १०२० में वरुणावतार भगवान श्री झूलेलाल भाद्रपद शुक्ला चतुर्दशी को अचानक जल समाधि लेकर अर्न्तध्यान हो गये.

सिन्धी समुदाय की शौर्य-गाथा अभी से ही नहीं, अपितु सनातन काल से चली आ रही है. जैसा कि नाम से विख्यात है. इतिहासकारों को भी मानना पड़ा कि सिन्धु घाटी की सभ्यता की हस्तलिखित शिल्प कृतियाँ जो खुदाई द्वारा मोहन जो दड़ो, हड़प्पा के रूप में दुनिया के सामने आई, कितनी प्राचीन हैं.

अर्वाचीन ग्रंथों के अनुसार 'सिन्धु नदी' (जिसका वर्णन वेदों में भी किया गया है) गंगा आदि नदियों का समावेश तो नई ईस्वी सम्वत् के अनुसार माना जाता है. सबसे प्राचीन तो सिन्धु नदी को ही माना गया है. वेदों की रचना भी सिन्धु नदी के पावन तट पर की गई थी. श्रीरामचरित मानस में भी सिन्ध शब्द का अनेक बार उल्लेख मिलता है. महाभारतकाल में भी सिन्धु नरेश का वर्णन किया गया है. राष्ट्रगान में 'पंजाब सिन्ध गुजरात मराठा..' आदि सिन्ध की महत्त्वत्ता को दर्शाते हैं. सृष्टि प्रारम्भ में सर्वप्रथम सिन्ध ही शब्द था. कालान्तर में सिन्ध से ही हिन्द शब्द प्रतिपादित हुआ. भागवत, रामायण, महाभारत व अनेक वेद ग्रंथों में जगह-जगह पर सिन्ध शब्दको महत्त्व दिया गया है. सिन्धु सभ्यता आदि जुगादि से चली आ रही प्राचीन परम्परा व सनातन संस्कृति है. ज्योतिष गणना का ग्रंथ भी निर्णय सिन्धु ही है.

सिन्ध प्रदेश के अनेकानेक संत महात्माओं ने भी सिन्धु नदी के पावन तट पर ही जन्म लिया है. जैसे- स्वामी लीलाशाहजी, सचल साहब, सामी साहब, शाह अब्दुल लतीफ, सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भी इसी सिन्धु नदी के पवित्र तट पर अवतरित हुए हैं. तब से चली आ रही ये प्राचीन सिन्धु सभ्यता की सनातन संस्कृति आज तक प्रचलित है. जो कि सिन्धी सभ्यता के नाम से सुप्रसिद्ध है. इसी सिन्धी समुदाय की परम्परा जाति को कायम रखने के लिये मनाया जाता है; प्रत्येक वर्ष महापर्व चेटीचण्ड-झूलेलाल जयंती-सिन्धियत दिवस!

साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब), जयपुर

प्रेरक प्रसंग– एक राजा के तीन पुत्र थे। राजा उन तीनों की योग्यता को परख कर, उसके आधार पर अपने उत्तराधिकारी का चयन करना चाहता था। इसलिए एक दिन राजा ने उन्हें बुलाकर कहा – 'जाओ, किसी धर्मात्मा को खोजकर लाओ।' तीनों राजकुमार धर्मात्मा की खोज में निकल पड़े। कुछ दिनों बाद एक पुत्र, एक सेठ को लेकर राजा के पास पहुँचा और बोला – 'पिताजी ! इन सेठ जी ने नगर में अनेकों धर्मशालाएँ व मंदिर बनाए हैं।' राजा ने सेठ से ऐसा करने का कारण पूछा तो सेठ बोले- 'मैंने सुना है कि ऐसा करने से पुण्य मिलता है।' राजा ने उनका सत्कार किया और उन्हें धन देकर विदा किया। दूसरा राजकुमार एक ब्राह्मण को लेकर लौटा और उनका परिचय कराते हुए राजा से बोला – 'ये अत्यंत ज्ञानी व तपस्वी हैं।' राजा ने उनसे धर्म की परिभाषा पूछी तो वे बोले- 'शास्त्रोक्त कर्म करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है, उसी पथ का पालन धर्म है।' राजा ने उनको भी सम्मानपूर्वक दक्षिणा देकर विदा किया। तीसरा पुत्र एक गरीब से व्यक्ति को लेकर पहुँचा। राजा के पूछने पर वह बोला– 'पिताजी ! यह आदमी एक घायल गाय की सेवा कई दिनों से कर रहा था। मुझे लगा कि इसी व्यक्ति के अंदर सही धर्मात्मा होने का भाव है।' राजा ने उस आदमी से पूछा– 'तुम धर्म-कर्म का कोई कार्य करते हो?' वह आदमी बोला– 'महाराज! मैं एक गरीब किसान हूँ, अनपढ़ हूँ, धर्म-कर्म कुछ जानता नहीं हूँ। हाँ, यदि कोई जरूरतमंद, रोगी, दुःखी, अभावग्रस्त दिख पड़ता है तो यथाशक्ति उसकी मदद अवश्य करता हूँ।' यह सुनकर राजा बोला– 'कुछ पाने की आशा किए बिना सच्चे हृदय से दूसरों की सेवा करना ही धर्म है। तुम ही सच्चे धर्मात्मा को लेकर लौटे हो।' वह पुत्र ही राजगद्दी का अधिकारी बना।

संकलित

सद्‌गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

बिना गुरु की भक्ति के आत्म–ज्ञान प्राप्त करना असम्भव है।
ईश्वर से भी गुरु का महत्त्व बड़ा है ।

भगवान श्री झूलेलाल साई जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

नाम :- भगवान श्री झूलेलाल (उडेरोलाल/ अमरलाल)

जन्म :- सम्वत् 1007 चैत्र शुक्ला द्वितीया	ईस्वी सन् :- 950
दिन :- शुक्रवार (थारूं) - जुम्मो	तिथि :- चन्द्र दर्शन (चण्ड) चेटीचण्ड
अवतरण पर नाम :- उडेरोलाल	नामकरण संस्कार छठी पर नाम :- उदय चन्द
पिता श्री का नाम :- भक्त रतन राय	माता श्री का नाम :- माता देवकी
जन्म स्थान :- नसरपुर	जन्म का समय :- सांयकाल संध्या
गुरु दीक्षा / श्री गुरुदेव :- श्री गुरु गोरखनाथ जी महाराज	विद्या अध्ययन :- 5 से 8 वर्ष की आयु तक...
वेदों का अध्ययन :- 8 से 10 वर्ष तक..	उपनयन संस्कार (जनेऊ) :- 8 वर्ष में हुआ....
अवतार लेने का उद्देश्य :- सनातन हिंदू धर्म की रक्षा करना...	भगवान श्री झूलेलाल जी के अनेक नाम :- उडेरोलाल, उदय चन्द, ज़िंदह पीर, अमर लाल...
धराधाम पर कितने वर्ष लीला की :- मात्र 13 वर्ष 6 महिने तक अनेक लीलाऐं कीं....	अंतर्ध्यान दिवस :- सम्वत् 1020, भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी अर्थात अनन्त चतुर्दशी, सांय संध्या काल, ईस्वी सन् -963)
समाधि स्थल उडेरो लाल आस्थान :- उडेरो लाल रेल्वे स्टेशन के पास एक ही स्थान पर एक ओर अखंड ज्योति मन्दिर दूसरी ओर तुरबत	भगवान श्री झूलेलाल जी के मूल मंत्र :- ऊँ श्री वरूणाय नमः, ऊँ श्री उदय चन्द्राय नमः, ऊँ श्री ज्योति स्वरूपाय नमः, ऊँ श्री अमरलालय नमः.
साप्ताहिक जन्म दिवस :- शुक्रवार (थारूं)	मासिक जन्म दिवस :- चन्द्र दर्शन (चण्ड)
पंथ स्थापना :- दरिया पंथ (जल की सेवा करना तथा ज्योति का ध्यान करना)	मुख्य पूजा-पाठ :- जल की पूजा, ज्योति का ध्यान व बहराणा साहब... (ज्योति प्रवाहन)
आरती :- 1. गावे गावे परम पद पावे , अमर ज़िंदा तेरी आरती....	2. ओम जय दूलह देवा....
पलउ :- पलउ जे पाईनि- तिनि जा खांविन्द खाली न करीं.....	पंजिड़ा :- उतर डांहुं उथी आयो , मुंहिंजो सुहिणो सांवलु शाहु....

भगवान श्री झूलेलाल जी के प्रमुख उत्सव एवं दिवस :- प्रति शुक्रवार- साप्ताहिक अवतरण दिवस, प्रतिमाह चंद्र दर्शन- मासिक अवतरण दिवस, वार्षिक चेटीचण्ड- महापर्व जयंती महोत्सव, असू चण्ड- एकता दिवस पर्व व ज्योति स्वरूप में सर्वप्रथम भगवान श्री झूलेलाल साई का दर्शन होना, अनंत चतुर्दशी- अंतर्ध्यान दिवस तथा मनोकामना पूर्ण व्रत- चालीहा साहब....

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश अब सारा व्यवहार फैशन का हो गया है। फैशन से देश फना (बर्बाद) हो गया है।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

वरुणावतार भगवान झूलेलाल

यह उडे़रोलाल 'वरुण देवता' के अवतार हैं. जिस प्रकार से भगवान श्री रामचन्द्र और भगवान श्री कृष्णचन्द्र धर्म की रक्षा के लिए अवतार धारण कर आए थे, उसी प्रकार श्री 'उडे़रोलाल' भी धर्म की रक्षा हेतु अवतार धारण कर आए थे. जब-जब धर्म की हानि होती है, तब-तब सच्चिदानन्द घन परिपूर्ण परमात्मा अवतार धारण कर धर्म की रक्षा करते हैं.

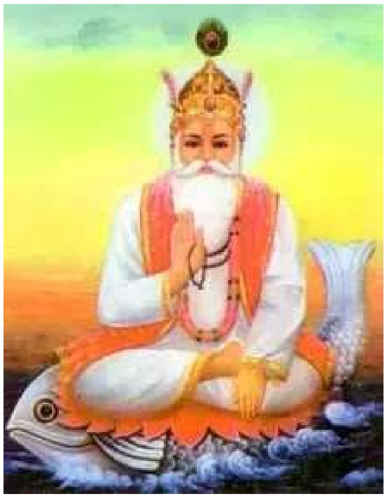

भजन राग विहाग

थलु : पाप सां पापिनि जडहिं संसार खे लाचारु कयो।
यज्ञ जप तप दान पूजा ऐं धर्म खां धार कयो।।
1. पाठ-पूजा नेमु व्रतु ऐं शुभु कर्मु संघारु कयो।
वेद विद्या देव मन्दिर जो घणो तिरस्कारु कयो।।
2. गांइ ब्राह्मण जे मथां पिणि तेग सों तिनि वारु कयो।
अति कुनीती दुष्कर्म सां हरि जगह आजारु कयो।।
3. तडहिं निर्गुण रूप मां हरि सगुणु ऐं साकारु थियो।
मनुष चोले में अची तंहिं प्रेम जो परचारु कयो।।
4. सन्त ब्राह्मण जे रख्या लइ हथनि में हथियारु खंयो।
कहे टेऊँ दुष्ट मारे धर्म जो जयकारु कयो।।

उडे़रोलाल भी धर्म की रक्षा के लिए अवतार धारण कर आए थे.

(पवित्र पुस्तक सद्गुरु टेऊँराम जीवन चरितामृत के तृतीय व अंतिम भाग के पृष्ठ 90 व 95 से)

सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज द्वारा भगवान झूलेलाल की स्तुति

सचनि जो दूलहु दरियाह शाहु, आहे राजा रांवल राउ। ज़ाहिरु पीरु ज़मीन ते सो मालिकु बेपरिवाहु।। टेक।।
पारब्रह्म मां जलु थ्यो पैदा तंहिंमां थी धरती, धरितीअ मां थ्या गुल फुल मेवा बाग़ बण्या बस्ती।
बागु घुमी गुल्ज़ारु डि़ठोसें अजबु चढ़ी मस्ती, चोरासी लख जूण्युनि खे सो सांवलु डे थो साहु।।1।।
दरियाह शाह जे दर जा आहिनि चारि वरण पूज़ारी, देवी देवा कनि था सेवा श्रद्धा सां सद्वारी।
दुनिया जे सभ देशनि जा था पूजिनि नर ऐं नारी, बारे जोत्यूं गुल फुल चाढ़िनि चित में धारे चाहु।।2।।
सवें हज़ारें अचनि सुवाली सभ जा काज करे, पलव प्रेम सां पाइनि जेके तिनिजी झोल भरे।
आशवन्दन जी आश पुजाए दुखड़ा दर्द हरे, बुडलनि जा थो बेड़ा तारे हीणनि जो हमिराहु।।3।।
निर्मलु नामु तहींजो जेके चाहु रखी चवंदा, जै जै झूले लालु उडे़रो लाति इहा लवंदा।
दूलह जे कृपा सां सेई पारि वञी पवंदा, कहे टेऊँ सो कामिलु आहे बेवाहनि जो वाहु।।4।।

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी अपने जीवन को अमूल्य समझकर सदा श्रेष्ठ कर्म करें।

राम कथा है- अमृत सागर

श्रीरामनवमी 26 मार्च पर विशेष

'राम कथा तो सागर जैसी है. शिवजी ने एक करोड़ श्लोकों में यह कथा वर्णित की है. राम के सभी गुण जीवन में उतारो. राजा राम की प्रत्येक मर्यादा जीवन में उतारोगे तो रामनवमी का उत्सव परिपूर्ण होगा, सफल होगा. शिवजी हर रोज उमा को इस रामकथा का रसपान कराते थे. हनुमानजी भी हर रोज सुनते थे. इस रामकथा का तो एक-एक श्लोक पापों का नाशकर्त्ता है. एक बार देव, ऋषि और मनुष्य शिवजी के पास रामायण माँगने गये. रामायण के एक करोड़ श्लोक हैं. शिवजी ने तीनों को बराबर-बराबर बाँटा तो एक श्लोक शेष रहा. देव, ऋषि और मनुष्य इस शेष बचे हुए श्लोक के लिए झगड़ने लगे.

शिवजी को लड़ाई-झगड़ा पसन्द नहीं है. जहाँ युद्ध, वैर, स्वार्थ, वासना, विषमता नहीं है, वही स्थान अयोध्या है और राम भी वहीं अवतरित होते हैं. जब कैकेयी के मन में विषमता, स्वार्थ, वासना जन्मी तब राम ने अयोध्या का त्याग किया. विषमता, लड़ाई-झगड़ा हुआ नहीं कि अयोध्या राम छोड़ देते हैं.

शिवजी की सभा में तो बैल और सिंह, चूहा और सर्प, मोर और सभी अपना-अपना जन्मजात वैर भूलकर एक साथ बैठते हैं. गरुड़ और सर्प भी अपना वैर भूलकर विष्णु भगवान् के सामने शान्त बैठ जाते हैं. वैर को भूल जाओ

शिवजी ने कहा-श्लोक एक है और इसकी इच्छा करने वाले तीन. इस श्लोक में बत्तीस अक्षर थे. सो शिवजी ने तीनों को दस-दस अक्षर दिये. अब शेष रहे दो अक्षर तो शिवजी ने कहा कि इन दो अक्षरों को मैं ही कण्ठ में रखूँगा. ये दो अक्षर हैं- 'राम'. शिवजी ने राम को अपने ही पास, अपने हृदय में रखा. इसी भाँति तुम भी राम को हमेशा अपने हृदय में ही रखना. शिवजी की भाँति हृदय में राम का स्थान और नाम हमेशा रहे तो भी ठीक संतोष की बात है.

श्रीराम के नाम जप से सभी कष्ट दूर होते हैं और सब कुछ शुभ होता है. भगवान् शंकर रामायण के आचार्य हैं. वे जगत् को बताते हैं कि मैं विष पी गया फिर भी राम नाम के प्रताप से मुझे कुछ भी नहीं हुआ. जीवन में विष पीने के प्रसंग आते हैं. जब भी ऐसा कटु प्रसंग आए, प्रेम से श्रीराम, श्रीराम बोलो, रामनाम से कंठ में से अमृत झरता है, जो विष को नष्ट कर देता है.

राम का नाम लेकर विष पी गए तो वह अमृत बन गया. संसार में भी निंदा, वैर, व्याधि आदि विष ही हैं. ऐसा सांसारिक विष जब भी जलाने के लिए आ पहुँचे तो रामनाम का जप करना. जब भी परिस्थिति प्रतिकूल हो जाए, पंद्रह मिनट रामनाम का जप करो, इसी से तो शिवजी को श्मशान में भी शाँति है.

श्मशानेश्वाक्रीड़ा, स्मरहर पिशाचाः सहचराः।
चिताभस्मालेपः स्त्रगपि नृकरोटीपरिकरः।।
अमंगल्ययं शीलं तव भवतु नामैवखिलं।
तथाऽपि स्मतृणां वरद परमं मंगलमसि।।

भगवान् शिव रामनामामृत का सदा पान करते हैं, अतः वे शिव हैं. कहते हैं कि राम की कथा तो मैं करता हूँ, फिर भी यह मैं नहीं जानता कि वे कैसे हैं? शिवजी की यह विनयशीलता है.

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

गुरु से क्या पूछा जाता है ? मंत्र या राय। यदि राय तो बात बिगड़ जायेगी, अशान्ति आ जायेगी। गुरु से राय तब ही पूछनी चाहिए जब कोई शिष्य अर्जुन की तरह मुसीबत में फँस जाये, जब वह अपने निर्णय लेने में सर्वथा असमर्थ हो जाये तब ही राय लेनी चाहिये वरना नहीं।

प्रेम प्रकाशी जगत का महाकुम्भ मेला- चैत्र मेला

105वां चैत्र मेला 1 से 5 अप्रेल 2026

मेलों और त्यौहारों का जीवन में वही स्थान होता है जो मरुस्थलों में मरु उद्यानों का. ये मेले और त्यौहार, ये उत्सव और पर्व जीवन की नीरसता और निर्जीवता को दूर कर उसमें आनन्द और उल्लास, उत्साह-स्फूर्ति भरते हैं जीवन-यात्रा में नवीनता और ताजगी के रंग बिखेर कर उसे सरस और इन्द्रधनुषी बनाते हैं और उन्हें जीवन्त और जाग्रत रखने में महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं.

मेले का शाब्दिक अर्थ है बहुत से लोगों का उद्देश्य सहित एक स्थान पर एकत्रित होना. आध्यात्मिक और धार्मिक मेलों में सब लोगों का एक ही स्थान पर एकत्रित होना होता है. यहाँ पर सब लोगों का एक ही लक्ष्य, एक ही उद्देश्य, एक ही अभिलाषा, एक ही आकाँक्षा होती है और वह है महापुरुषों के परम पावन जीवन से, विश्व की महान विभूतियों के सुन्दर चरितामृत से प्रेरणा प्राप्त कर अपना आत्म कल्याण और अपने जीवन का नव निर्माण करना. मेले का अर्थ है- मेल- मिलाप, हृदय का हृदय से मिलन, आत्मा का आत्मा से मिलन और उसके उच्चतम शिखर पर आत्मा का परमात्मा से मिलन.

इस मिलन का आधार स्तम्भ है प्रेम. परम पावन निःस्वार्थ प्रेम, शुच एवं सुन्दर प्रेम! इसी उद्देश्य को लेकर प्रेम प्रकाश पंथ के संस्थापक आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने चैत्र मेले की स्थापना की थी. चैत्र मेले का शुभारम्भ चैत्र मास शुक्ल पक्ष की चर्तुदशी तिथि, सिंधी तिथि चैत्र बारह को सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने स्वयं अपने कर कमलों से किया था. अमरापुर (जिसे डिब॒ भी कहा जाता है) की स्थापना चैत्र मेले के शुभारम्भ पश्चात्, आचार्यश्री ने अपना पंथ बनाया, जिसे प्रेम प्रकाश पंथ का नाम दिया.

सिंध में यह मेला अमरापुर दरबार टंडोआदम में प्रतिवर्ष श्रद्धा,उत्साह, आनन्द और उल्लास के साथ मनाया जाता था. इस मेले रूपी महाब्रह्मयज्ञ में भाग लेने के लिए सिंध प्रदेश के कोने- कोने से प्रेमी सत्संगी गुरुमुख, जिज्ञासु और मुमुक्षु आया करते थे. न केवल सिन्ध परन्तु पंजाब, राजस्थान, गुजरात एवं अन्य प्रदेशों से भी भक्त आते थे. विदेशों से भी कई लोग टंडोआदम पहुँचकर सद्गुरु महाराज जी के श्रीचरणों में नत् मस्तक होते थे. प्रेम प्रकाश पंथ के संत महात्माओं के अलावा अन्य स्थानों से संत-महात्मा, गायक, भजनीक, कवि- शायर, पंडित, विद्वान, दार्शनिक एवं विचारक इस मेले में सम्मिलित होते थे. सेवाधारी और स्वयंसेवक भी तन, मन, धन से मेले में सेवा कर अपना जीवन सफल करते थे.

सब तत्त्ववेत्ता संत-महात्मा एक तथ्य को समान रूप से स्वीकार करते हैं कि जीवन की दो ही परम आवश्यकताएँ हैं- भजन और भोजन! संत-महात्माओं और हम संसारी जीवों के सोच विचार में बस एक ही अन्तर है और वह है- हम संसारी जीवन भोजन को प्राथमिकता देते हैं जबकि संत महात्मा भजन को ही प्रधानता देते हैं. संत महात्मा यह मानकर चलते हैं कि जिस परमात्मा ने बच्चे के जन्म से पहले ही माता के स्तनों में दूध भरकर उसके आहार की व्यवस्था की है, जो विश्वम्भर है, जो चींटी का कण और हाथी को मण आहार देता है, उस परमपिता परमात्मा का भजन कर, उसके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट कर, उसका गुणगान कर, फिर बाँटकर प्रसाद रूप में भोजन पाना चाहिए. ज्ञानी और दूरदर्शी महात्मा भी भोजन की महत्ता को समझते हैं, अन्न भगवान की अनिवार्यता को जानते हैं. वे इस तथ्य से भलीभाँति परिचित हैं कि 'भूखे पेट भजन न होइ गोपाला'. एक संत ने तो यहाँ तक कहा है कि एक भूखे इन्सान को रोटी न देकर उससे ज्ञान-विज्ञान, ब्रह्म-वेदान्त,

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

अपने गुरू पर हजारों बार बलिहार जाऊँ जिसने मुझे पशु से मनुष्य, मनुष्य से देवता और देवता से भगवान बना दिया।

आत्मा-परमात्मा की बातें करना, दरिद्रनारायण का अपमान करना ही है. सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा शुभारम्भ किये गये चैत्र मेले के दिनों में भजन की विस्तुत और भोजन में इतना सुंदर संतुलन और साँमजस्य होता है कि शरीर और आत्मा दोनों तृप्त और संतुष्ट हो जाते हैं. ध्यान रहे इस पवित्र चैत्र मेले के अवसर पर कई परम उदारी सद्गृहस्थ आते हैं जो भण्डारे करवाते हैं. एक तो नाना प्रकार के षट्रस भोजन तिस पर उन्हें अनुशासित पंक्तिबद्ध बैठकर ईश प्रार्थना के पश्चात् प्रसाद रूप में पाना, ऐसा आनन्द देता है, जो आनन्द कृत्रिम अशुचि, छीना झपटी वाले पाँच सितारा होटलों में कदापि नहीं मिल सकता. उस प्रेम, सरस, स्नेहासक्त भोजन का स्वाद ही अद्वितीय अवर्णनीय है.

चैत्र मेला, जो कि भारत विभाजन के पश्चात् प्रथम बार अहमदाबाद में मनाया गया था. उसे हर्षोल्लास से मनाने में सेठ जगजीवनलाल और उसके सहयोगियों, गुजराती भाई बहिनों ने पूरा-पूरा और हार्दिक सहयोग दिया. कहना न होगा कि श्री जगजीवनलाल सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महारज के परम उपासक भक्त थे.

चैत्र मेला जो अब श्री अमरापुर स्थान, जयपुर में वर्तमान स्वरूप में मनाया जाता है. इस भव्य मेले के शुभारम्भ होने से काफी पहले ही सब संत महात्माओं, प्रेमियों, सत्संगियों को निमंत्रण-पत्र भेज दिये जाते हैं. साथ ही पंथ के मुखपत्र 'प्रेम प्रकाश संदेश' द्वारा ऑनलाइन भी सम्पूर्ण विश्व में प्रेमियों को घर बैठे मेले की सूचना प्राप्त हो जाती है.

इस चैत्र मेले के पावन पर्व पर संत समागम का एक ऐसा दिव्य नज़ारा उपस्थित होता है, ऐसी ज्ञान-गंगा प्रवाहित होती है जिसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है. ज्ञान- गंगा से भी बढ़कर प्रेम का ऐसा प्रवाह बहता है, स्नेह की ऐसी सरिता उमड़ पड़ती है, और दिव्य आनन्द की अनुभूति होती है. मेले के अवसर पर भाईचारे, सेवा, त्याग और सत्संग का अलौकिक दृश्य दृष्टिगोचर होता है.

चैत्र मेलेका शुभारम्भ प्रेम प्रकाश पंथ के ध्वजारोहण, हवन, सद्गुरु महाराजजी की आरती, वन्दन, पूजा-अर्चना और पवित्र ग्रंथों श्रीमद्भगवद्गीता, श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के पाठों से होता है. पाँचो दिन नित्य प्रति सत्संग एवं अखण्ड भण्डारा चलता है. जिसमें सभी श्रद्धालु प्रसाद ग्रहण कर अपने जीवन को सार्थक बनाते हैं. इसी दिन सायं ३ बजे एक भव्य शोभा- यात्रा आरम्भ होती है. इस शोभायात्रा में सद्गुरु महाराज की आदमकद भव्य स्वरूपों (मूर्तियों) के साथ लीलावतारों की विविध सजीव झाँकियाँ भी शोभायात्रा का विशेष आकर्षण होती हैं. मेले में नाना प्रकार की सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक झाँकियां भी प्रस्तुत की जाती हैं. देश- विदेश से पधारी प्रेम प्रकाशी भजन मण्डलियाँ अपने-अपने शहर के नाम का बैनर लिये हुए, गुरुभक्ति के गीत-धुनियाँ गाती- बजाती नृत्य करती हुई, जिसमें छेज़ प्रधान होती है, एक अलग ही छटा बिखेरती हैं. श्री अमरापुर दरबार से आरम्भ होकर शहर के मुख्य मार्गों से गुजरती हुई, पुनः अमरापुर स्थान पर ही शोभायात्रा पहुँचती है. शोभायात्रा का हार्दिक भव्य स्वागत करने के लिये शहर की विभिन्न सामाजिक, व्यापारिक, धार्मिक संस्थाओं के अतिरिक्त प्रेमियों, संस्थानों द्वारा स्थान-स्थान पर तोरण द्वार बनाये जाते हैं, और यहाँ पर सद्गुरु महाराजजी की मूर्तियों एवं वर्तमान पीठाधीश्वर सहित सभी संतों को पुष्पहार पहनाकर, नमन कर आशीर्वाद लेते हैं. इन स्वागत-कर्त्ताओं द्वारा अनेक प्रकार के प्रसाद व समधुर पेय पदार्थों का वितरण किया जाता है एवं पुष्पवर्षा व गुलाबजल की बौछार भी की जाती है. भजन मण्डलियों में महिलाओं और बच्चों में भी विशेष उत्साह और हर्षोल्लास दिखायी देता है.

भजन मण्डलियों में एक विचित्र प्रकार की मौज मस्ती का आलम रहता है. बीच-बीच में गुरु महाराज एवं संतों महात्माओं की जय-जयकार से आकाश गूँज उठता है. कई सेवाधारी ऐसे अलौकिक दृश्यों को कैमरा में उतारकर भविष्य में प्रेम प्रकाशी सत्संगियों को प्रेरणा प्रदान करते हैं.

मेले का यह समय सद्गुरु महाराज ईश्वर को समर्पित होने के कारण चिन्ता रहित और चिन्तन से परिपूर्ण होता है. इस मेले के पश्चात् प्रेमी आत्म-चिन्तन कर अपने जीवन को सफल और सार्थक बनाने का सुन्दर प्रयास करते हैं.

लघुकाशी नगरी जयपुर जिसे गुरुनगरी कहना भी अतिश्योक्ति नहीं होगी, सड़क, रेल, वायुमार्ग से देश के लगभग समस्त भागों से जुड़ी हुई है.

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

आज कल के लोगों को सिनेमा, सिगरेट, पान, सुपारी और चाय के अलावा कहीं भी सुख देखने में नहीं आता है।

चैत्र मेला सिंधी बारहवीं तारीख को ही क्यो....

चैत्र मेला विशेष 1–5 अप्रेल 2026

प्रेम प्रकाश मण्डल का, चैत्र मेला अभिराम।
संत जनों का दरस कर, पाओ आत्मराम।।

मिलो मिलाओ मिल रहो, मिलो तो मेला होय।
अन्तर आत्म जो मिले, मेला कहिये सोय।।

एक समय टण्डा आदम में स्थित श्री अमरापुर दरब़ार (डिब़) पर कुछ संत-महात्मा एवं भक्तजन एकत्रित हुए। उन्होंने स्वामी जी को दण्डवत् प्रणाम किया और हाथ जोड़कर विनती करने लगे कि हे भगवन्! आप तो सैलानी संत-महापुरुष हैं– कभी कहाँ तो कभी कहाँ– जीवों के उद्धार हेतु यत्र-तत्र भ्रमण करते हैं– नाम का उपदेश देते हैं । जन-जन के हृदय में ज्ञान का दीप प्रज्ज्वलित कर रहे हैं । अंधकार में डूबे हुए जीवों को सत्मार्ग की राह दिखला रहे हैं। चल तीर्थ के समान सत्संग गंगा में स्नान करवा रहे हैं। अज्ञानता की नींद में सोये हुए लोगों को जगा रहे हैं। किन्तु श्री अमरापुर दरब़ार (डिब़) पर प्रतिदिन अनेक संत-महात्मा एवं श्रद्धालुगण दूर-दूर से आपके दर्शनों के लिये यहाँ आते ही रहते हैं। आप तो सदैव सैलानी हैं अर्थात् भ्रमण करते रहते हैं और इस स्थान डिब़ पर आपका रहना बहुत कम समय के लिये ही होता है । इस कारण प्रेमी भक्तजन आपके दर्शनों से वंचित होकर निराश लौट जाते हैं। अतः आपश्री के ''पूज्य श्रीचरणों'' में प्रार्थना है कि ऐसे कुछ दिन निश्चित कर दीजिए, जिससे संत, भक्त, प्रेमी आपका दर्शन व सत्संग श्रवण कर अपना जीवन सफल बना सकें ।

इस पर स्वामी जी ने सभी संत-महात्मा, सत्संगी प्रेमियों को एक बैठक में प्रस्ताव देते हुए कहा- 'इस डिब़ (बालू रेत का टीला) पर चैत्र मास की सिन्धी बारहवीं तारीख को रेत का चबूतरा और झोंपड़ियाँ बनाकर सत्संग का शुभारम्भ किया जाये । अतः चैत्र मास की सिन्धी बारह तारीख से लेकर चार दिन तक संत-महात्मा, भजन मण्डलियाँ, प्रेमी भक्त जन आदि सभी के लिये अखण्ड भजन-भोजन का समागम रखना चाहिए.....'

स्वामी जी का यह सुझाव सभी संत-महात्माओं, भक्तजनों ने प्रसन्नचित्त होकर स्वीकार किया। चैत्र मास में बसन्त ऋतु होती है। रातें ठण्डी और सुहावनी होती हैं। गर्मी भी अधिक नहीं पड़ती। **हिन्दू संस्कृति का नव वर्ष भी चैत्र मास से प्रारम्भ होता है**। फसल कटाई होकर इस समय किसान भी फुर्सत में होता है (उस समय सिन्ध में अधिकांश लोग खेती-बाड़ी का कार्य ही करते थे) इसी मास में चेटीचण्ड, श्रीरामनवमी, नवरात्रा, श्रीहनुमान जयंती आदि पवित्र पर्व-उत्सव मनाये जाते हैं । अतः इस मास में 'मेला' लगाना अति उत्तम होगा और इस मेले को **'चैत्र मेला'** के नाम से जाना जायेगा।

इस पवित्र आध्यात्मिक चैत्र मेले में दूर-दूर के प्रेमी भक्तजन, संतों के श्रीमुख से सत्संग गंगा में स्नान कर लाभ उठा पायेंगे! इस प्रकार **'चैत्र मास की बारहवीं तारीख'** को चैत्र मेला प्रतिवर्ष मनाये जाने का निश्चय हुआ!

आज भी सिद्ध तपस्वी युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा स्थापित कुम्भ सदृश विशाल 'चैत्र मेला' लघु काशी कही जाने वाली गुलाबी नगरी जयपुर के पावन तीर्थ स्थल श्री अमरापुर स्थान (डिब़) पर प्रतिवर्ष बड़ी भव्यता एवं श्रद्धा, भक्ति-भाव के साथ मनाया जाता है। जिसमें लाखों प्रेमी, भक्तगण सत्संग सेवा का लाभ लेते हैं।

पाँच दिनों तक चलने वाले कुम्भ सदृश चैत्र मेले में युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का अखण्ड भजन व भोजन (भण्डारा) **'लेने वाले बाबा टेऊँराम-देने वाले बाबा टेऊँराम'** उक्ति को चरितार्थ करता हुआ चलता रहता है । इस अवसर पर असंख्य श्रद्धालुगण ज्ञानसरिता में डुबकी लगाकर अपने जीवन को धन्य-धन्य बनाते हैं।

साधक, श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

हम सांसारिक सहारे छोड़कर भगवान की शरण लें तो आपको चारों पदार्थ धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति होगी।

भजन

तर्जः गंगा मईया में जब तक ये पानी रहे....

मेला ओ मेला-ओ देखो मेला, परम पुरुष सुखधाम का
मेरे गुरुदेव स्वामी टेऊँराम का, स्वामी टेऊँराम का ।।

1. मेरे सत्गुरु ने मेला लगाया, धाम अमरापुरी का बनाया ।
रेत उड़ने लगा किया तप से खड़ा,
ऐसे अमरापुर स्थान अभिराम का ।।

2. ऐसा मेला सत्गुरु ने लगाया, बिछड़े जीवों को हरि से मिलाया ।
आप बनके दयाल, किया सबको निहाल,
मन्त्र सबको दिया साक्षी सत्नाम का ।।

3. यह मेला सत्गुरु ने लगाया, सबको मेल-मिलाप सिखाया ।
दे के प्रेम प्रकाश, किया तम का विनाश,
पंथ दिखलाया दुनिया को विश्राम का ।।

4. इस मेले की महिमा है भारी, आते दर्शन को लाखों नर-नारी ।
मन में श्रद्धा धरे, कारज पूर्ण करे,
प्रकट प्रताप जग में पूरण काम का ।।

5. इस मेले की पावन प्रसादी, धाम पाओ अमरापुर अनादि ।
दूर संकट करो, सारे बंधन हरो,
पाओ दर्शन मनोहर सुन्दर श्याम का ।।

तर्ज - पुरानी
टेक - अमरापुर दरबार आ - जयपुर में जिनसार आ

1. टेऊँराम गुर कई कमाई - वारी वेही वीर वसाई
मौज तहिंते खूब मचाई - नाऊं तिनी निरवार आ....

2. बाग चिमन आहिन चौधारी, घुमण फिरण जी आहे बहारी
सुंदर मंदर बणिया सुखकारी- झंडो झलकेदार आ....

3. रातियां ड्रीहां भंडार हले थो- अविय सविय जो पेट पले थो
आए वए खे मान मिले थो - अतिथिन जो सत्कार आ....

4. मेलो ब़ारीहं चेट लगे थो, चार ड्रिहाड़ा रंग रचे थो
गुरमुख आनन्द खूब अचे थो - प्रेम संदो परचार आ.....

तर्ज - ये मेरा दीवानापन है
टेक - कर हली दरशन प्यारा, अमरापुर जे धाम जो
सिंधु जे साजन सच्चारे - स्वामी टेऊँराम जो

1. भाग़ु वारा भाग़ सां - संत समागम थई मिल्यो
ज़णु सदोरा पुञं तुहिंजे - जनम अगले जो थई खुल्यो
ही बिञाइज कीन मौको - पिऊ प्यालो नाम जो.......

2. संत सागर थई दयालू - सभु मुरादूं पाईन्दें
भाव मन में जे सच्चो थी - का खता ना खाईन्दें
था वठन सवलो सवलो मंतर - साखी सत्नाम जो....

3. स्वामी सर्वानन्द साहब - सुखन जो भंडार थई
प्रेम प्रकाशी मंडल जो - महंत मैनदार थई
छा लिखां वेही बयान मां - संत तहिं सुखधाम जो.......

4. महबती मेड़ो मतो थई - शहर जयपुर जे अंदर
छा बणयो दरवेशन जो ज़णु - स्वर्ग खां सुहणो मंदर
परमानन्द बस प्रेमु रखु तूं - फलु थई चईन धाम जो....

चेट जो मेलो

अचो त चेट जो मेलो मल्हायूं,
गीत गुरनि जा गड़िजी ग़ायूं।

1. अमरापुर तीर्थ स्थल आ, ज्ञान जे गंगा जो हिति जल आ,
सलाम साक्षी, टुबि्यूं लग़ायूं, अचो त चेट जो मेलो मल्हायूं।
2. सत्गुरु टेऊँराम लासानी, राह ड्रेखारियाऊं रब जी रूहानी,
सलाम साक्षी जपियूं जपायूं, अचो त चेट जो मेलो मल्हायूं।
3. सत्गुरु सर्वानन्द सूंहारा, ज्ञान भक्तिअ जा हुआ भंडारा,
अचो त तिनि जो ध्यान लग़ायूं, अचो त चेट जो मेलो मल्हायूं।
4. कर्मयोगी स्वामी शान्तिप्रकाश, प्रेमियुनि जी कयाऊं पूरी आश,
अचो त तिनि जी सिख्या हंडायूं, अचो त चेट जो मेलो मल्हायूं।
5. स्वामी हरिदासराम नाम जपायो, सलाम साक्षी पाठ पढ़ायो,
असीं बि नाम सां नींहुं लग़ायूं, अचो त चेट जो मेलो मल्हायूं।
6. स्वामी भगतप्रकाश यश फहिलायो, प्यार ड्रई जिनि पंहिंजो बणायो,
'आशा' हार हीरनि जा पायूं, अचो त चेट जो मेलो मल्हायूं।
7. किथां किथां जा प्रेमी आया, तिनि जा थींदा लाया सजाया,
'आशा' खीर में खंडु मिलायूं, अचो त चेट जो मेलो मल्हायूं।

डॉ. दयाल 'आशा', सिंधुनगर

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

आत्म-ज्ञान, ब्रह्म-ज्ञान, ईश्वर-दर्शन कोई साधारण बात नहीं, इनका बड़ा महत्व है, और बड़ा ही रहस्य युक्त है। इस रहस्य को जानने के लिये शास्त्रों का गहन अध्ययन करना पड़ेगा। 'श्री रामायण', 'श्री महाभारत' यह कोई साधारण ग्रन्थ नहीं-ऋषिकृत ग्रन्थ हैं। पढ़ना हमें कब पड़ेगा ? जब हमें जाना हो आगे।

अनेक रोगों का एक ही उपचार प्रातः पानी प्रयोग

डायबिटीज, ब्लडप्रेशर, लकवा, पथरी, गैस, मस्सा, बवासीर, हृदयरोग जैसे खातरनाक रोगों का नाशक एक सफल प्रयोग।

नई तथा पुरानी अनेकों प्राणघातक बीमारियाँ दूर करने का एक मात्र उपाय प्रातः काल जल सेवन । प्रभातकाल में सूर्योदय से पूर्व उठकर, बिना मुँह धोये बिना मंजन-ब्रश किये, प्रतिदिन करीब सवा लीटर (चार बड़े गिलास) रात का रखा हुआ पानी पी लें । तदन्तर ४५ मिनिट तक कुछ भी न खाएँ-पीयें । पानी पीने के बाद मुँह धो सकते है, ब्रुश कर सकते हैं । जब भी यह प्रयोग चलता हो उन दिनों में नाश्ता व भोजन करने के दो घंटे बाद ही पानी पीयें । नियमित प्रातः काल में जल सेवन से निम्नलिखित नई, पुरानी तथा अन्य बीमारियों में लाभ होता है ।

मधुमेह (डायबिटीज), ब्लडप्रेशर
लकवा (पेरालिसिस)
कफ, खाँसी, दमा (बोन्काईटीस)
लीवर के रोग
स्त्रियों का अनियमित मासिक स्त्राव
(पथरी धातुस्त्राव आदि)
गर्भाशय कैंसर, बवासीर (मस्सा)
कील-मुंहासे-फोड़े-फुन्सी
वृद्धत्व व त्वचा पर झुर्रियाँ पड़ना
मोटापन, टी.बी., पेशाब की समस्त बीमारियाँ
एसीडिटी (अम्लपित्त), सूजन, बुखार
वात, पित्त, कफजन्य रोग
सिरदर्द, जोड़ो का दर्द
हृदय रोग व बेहोशी, मेनीनजाईटीस
आँखों की समस्त बीमारियाँ
प्रदर, गैस्त्रिटक ट्रबल व कमर से संबंधित रोग । पेट के रोग? मानसिक दुर्बलता आदि

बीमार या बहुत ही नाजुक प्रकृति के लोग एक साथ चार गिलास पानी न पी सकें तो पहले वे एक-दो गिलास से आरंभ कर बाद में धीरे-धीरे बढ़ाकर चार गिलास पर आ जाएँ, फिर नियमित रूप से चार गिलास पानी पीते रहें । अनुभवों एवं परीक्षणों से निष्कर्ष मिला है कि इस प्रयोग से विभिन्न रोग निम्नलिखित समय में दूर हो सकते हैं ।

हायपरटेन्शन	छह महीने में
कैंसर	छह महीने में
डायबिटीज	एक महीने में
प्रदर रोग	एक महीने में
गैस की तकलीफें	दस दिन में
कब्ज	दस दिन में
टी.बी.	तीन महीनें में
लकवा	तीन महीनें में

पूर्व वर्णित अन्य रोग दस दिन से छह माह की अवधि में प्रकृति अनुसार ।

वायु रोग व जोड़ो के दर्द से पीड़ित रोगी यह प्रयोग एक सप्ताह तक दिन में तीन बार करें ।

चार गिलास पानी एक साथ पीने से स्वास्थ्य पर कोई कुप्रभाव नहीं पड़ता है । हाँ, आरम्भ के दो-चार दिनों में, पेशाब कुछ-कुछ देर में आएगा लेकिन बाद में पूर्ववत् हो जाएगा ।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

जिस किसी को भी भगवान की भक्ति करनी है तो वह अपने मन को बार-बार समझाने का प्रयास करे।

ग्वालियर में स्वामी गणेशानन्दजी महाराज का 125 वाँ जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया

ग्वालियर। परम श्रद्धेय संत शिरोमणी पूज्य स्वामी गणेशानन्द जी महाराज का १२५वां जन्मोत्सव दिनांक १२ से १६ फरवरी २०२६ तक परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता एवं पूज्यनीय सन्त मण्डल की उपस्थिति में बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ मनाया गया।

पूज्य स्वामी गणेशानन्द जी महाराज के १२५वें जन्मोत्सव के प्रथम दिन १२ फरवरी को प्रातः ५:३० से ७:३० बजे तक हरिनाम संकीर्तन प्रभातफेरी निकाली गई जिसमें शामिल सैकड़ो भक्तों ने 'हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे' का सामूहिक गायन करते हुए नगर को हरिरस के अमृत से पावन कर दिया. इसके बाद पंच दिवसीय श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं श्रीमद्भगवद गीता के पाठारम्भ से मेले का शुभारम्भ हुआ. सायंकाल को ४ से ७.१५ बजे तक सत्संग हुआ। परम पूज्य गुरुदेव संत मण्डली सहित दतिया से चलकर रात्रि ९.३० बजे लश्कर ग्वालियर के गाढ़वे की गोठ स्थित स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम पहुँचे तो बड़ी संख्या में उपस्थित श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली के प्रेमी हर्षोल्लासित होकर सद्गुरु टेऊँराम भगवान का उच्च स्वर से जयघोष करने लगे. संत हरिओमलाल जी ने गुरुदेव भगवान का हार्दिक स्वागत-अभिनन्दन किया . पूज्य महाराजश्री द्वारा नवनिर्मित लिफ्ट का पूजन कर शुभारंभ किया गया।

१३ फरवरी को प्रातःकालीन सत्संग सभा में जब गुरु महाराज जी की मंत्रमुग्ध करती मनमोहक छवि के दर्शन उपस्थित प्रेमियों को हुए तो महाराजश्री के अभिनन्दन में खचाखच भरा सत्संग सभालय हर्षित होकर करताल करने लगा. प्रतिदिन प्रातः ८ से १० व सायंकाल ४ से ७:१५ बजे तक सत्संग ज्ञानगंगा अमृत का लगभग ढाई हजार की संख्या में भक्तों ने रसास्वादन लिया एवं अपने मन हृदय को अमृत वचनों से रोशन किया.

शुक्रवार १३ फरवरी को नवनिर्मित गौनन्दनि गौशाला में पूज्य महाराजश्री द्वारा गौपूजन किया गया।

शनिवार १४ फरवरी को प्रातःकाल सत्संग सभा के पश्चात् २० बटुकों को सामूहिक उपनयन संस्कार से पं. जीतू महाराज द्वारा दीक्षित किया गया. संतों द्वारा उपरोक्त बच्चों को उज्ज्वल जीवन जीने की युक्तियाँ बताकर पाखर पहनाकर आशीर्वाद दिया गया तत्पश्चात् बटुकों के परिजनों के लिये भण्डारें का आयोजन भी किया गया।

15 फरवरी– महाशिवरात्रि का पावन पर्व व बाबा स्वामी गणेशानन्द जी महाराज का १२५वाँ अवतरण दिवस! इस पावन अवसर पर प्रातः ५ से ६ बजे तक 'हरीओम नमः शिवाय, शिव हरीओम नमः शिवाय' महासंकीर्तन की मस्ती से

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश वैराग्य के बगैर भगवान की इस माया से कोई भी छूट नहीं सकेगा।

मुदित हुए बड़ी संख्या में भक्तगण. प्रातः ६:३० से ८:१५ बजे तक हवन-यज्ञ करके देवताओं को महोत्सव में शामिल होने के लिए आह्वान किया गया. हवन के पश्चात् ८:१५ से १० बजे तक सत्संग ज्ञानयज्ञ में संगत के हृदय ज्ञानज्योति से प्रकाशित हुए.

ग्वालियर नगरी के पूज्य सिंध हिंदू जनरल पंचायत, पूज्य कंधकोट पंचायत, भारतीय सिंधु सभा एवं सिंधु वेलफेयर सोसायटी द्वारा भी गुरु महाराज जी का अभिनन्दन शहर के सिंधी समाज की ओर से किया गया. सम्मान- अभिनन्दन समारोह के बाद स्वामी शान्तिप्रकाश नेत्र चिकित्सालय में पहुँचकर सद्गुरु महाराज जी द्वारा अस्पताल के समस्त सेवाधारियों को मंगल आशीष से मालामाल किया गया. तत्पश्चात् सत्संग प्रवचन के बाद स्वामी शान्तिप्रकाश चिकित्सालय के सेवाभावी चिकित्सकों के हृदय गुरु बाबा के पावन कर कमलों से मंगल आशीष स्वरूप पखर प्रसाद पाकर आनन्द विभोर हो उठे.

इसके बाद श्री प्रेम- प्रकाशी ध्वजावंदन का परम मनोरम कार्यक्रम अत्यंत आनन्दोल्लास से सम्पन्न हुआ.

झण्डावन्दन के बाद बालिकाओं का कन्या भोज का कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें प्रज्ञाचक्षु बालिकाओं को पूज्य महाराजश्री द्वारा यथायोग्य भेंटादि देकर भोजन-भण्डारा कराया गया। बालिकाओं द्वारा भगवान कृष्ण के सुन्दर भजन भी गाये गये।

सायंकालीन सभा में बाबा गणेशानन्द जी महाराज के १२५वें जयंती दिवस पर दीप प्रजज्वलन कर बधाई गीत गाये गये।

सद्गुरु महाराज जी संतों के सानिध्य में रात्रि ६:०० से ६.३० बजे तक श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली, श्री प्रेम प्रकाश महिला सेवा मण्डली, श्री अमरापुर नवयुवक मण्डली, श्री प्रेमप्रकाशी बालिका मण्डली द्वारा भजन अन्ताक्षरी का आनन्द लिया गया. सभी सेवाधारियों को गुरु महाराज जी द्वारा आशीष स्वरूप खर्ची दी गई.

अंतिम दिवस १६ फरवरी को प्रातःकालीन सत्संग के बाद पाठों का भोग पारायण संतों द्वारा हुआ-आरती पल्लव के पश्चात् पूज्य गुरु महाराज जी संत मण्डल के साथ प्रातः ११.३० बजे पलवल के लिए प्रस्थान कर गए.

जन्मोत्सव मेले के अवसर परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के साथ, संत हरिओमलाल जी, संत संत शंभूलाल जी, संत प्रतापलालजी, संत छोटूराम जी, संत कमल (गांधीधाम), संत ढालूराम जी, संत कमल (जयपुर), भगत हरिदास एवं दीपक भगत के प्रवचनों से हजारों की संख्या में संगत ने लाभ लिया. इसी के साथ देश-विदेश के अन्य प्रेमीगणों ने भी मेले में शामिल होकर अपना जीवन सफल किया।

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

प्रेम में चुम्बकीय शक्ति है।
वह या तो भक्त को भगवान से मिलाती है या भगवान को भक्त से।

समाचार डायरी

महाशिवरात्री पर्व धूमधाम से मनाया गया

जयपुर। आस्था के पावन केंद्र श्री अमरापुर स्थान जयपुर में १५ फरवरी रविवार को महाशिवरात्रि का पावन पर्व पूर्ण श्रद्धा भाव से मनाया गया।

श्री अमरापुरेश्वर महादेव का गंगाजल एवं संगम प्रयाग जल से हुआ विशेष अभिषेक । उत्सव के उपलक्ष में प्रातः ६ बजे संत महात्माओं द्वारा श्री अमरापुरेशवर महादेव मंदिर में एक एक घड़ी २४ मिनट की विशेष पूजा का आयोजन किया गया। जिसमें देवों के देव भगवान महादेव का गंगा जल, दुग्ध अभिषेक से किया गया। इस विशेष पूजा में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। प्रातः ७ बजे विशेष पूजा अर्चना के उपरांत नित्य नियम प्रार्थना, संत महात्माओं द्वारा भजन संकीर्तन, प्रवचन कैसेट, हवन यज्ञ अनुष्ठान, ध्वज वंदना आदि का कार्यक्रम हुआ। श्री अमरापुरेशवर महादेव मंदिर में संतो के सानिध्य में प्रातः १० से ११ बजे तक सामूहिक पूजा, अभिषेक कर भोले बाबा को बिल्व पत्र, आक धतूरे की माला, रुद्राक्ष की माला अर्पित कर आरती की गई। उत्सव के उपलक्ष में विशाल भंडारे का आयोजन भी किया गया। जिसमें हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने भंडारे का प्रसाद चखा। श्री अमरपुरेश्वर महादेव मंदिर में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भोले बाबा की मनमोहक सुंदर बर्फ की झांकी सजाई गयी । नन्हे नन्हे शिव जी ने सबका मन मोहा। इस अवसर पर भक्तों को दिनभर ठंडाई प्रसाद वितरित किया गया।

जयपुर समेत अन्य शहरों में स्थित प्रेम प्रकाश आश्रमों पर भी महाशिवरात्री का पावन पर्व बड़े ही उत्साह-उमंग के साथ मनाया गया ।

सद्‌गुरु हरिदासराम वचनावली

धर्म किसी जाति, सम्प्रदाय, संस्था या आश्रम को नहीं कहते। धर्म के मायने कुछ और होते हैं। जीवन में जब हमारा उससे परिचय हो जायेगा तब ही तत्त्व की प्राप्ति संभव है।

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में तिलक एवं पुष्पों की होली मनायी गयी

अमरापुर स्थान बना– ब्रज धाम....
स्वामी टेऊँराम – मेरे खंडू वाले....
तू ना संभाले... तो हमे कौन संभाले...
भजन संकीर्तन पे झूमें श्रद्धालु भक्त...

जयपुर। आस्था, श्रद्धा, भक्ति के पावन केंद्र श्री अमरापुर स्थान जयपुर में ४ मार्च बुधवार को होली का पावन पर्व बड़े ही हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया गया । प्रातः काल से ही श्रद्धालुओं का दर्शन दीदार को तांता लगा रहा । नित्य नियम प्रार्थना के पश्चात सतगुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज की प्रवचन कैसेट के माध्यम से वाचन हुआ । संतो द्वारा सतगुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज द्वारा रचित वाणी के भजन **संतो के संग होली खेलो..... पीओ प्रेम प्याला रे....** आदि भजन गए गये।

संत महात्माओं द्वारा नरसिंह भगवान और आचार्य सदगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज श्री की प्रतिमाओं को कुंगु केसर का तिलक लगा होली के मिष्ठान (घियर गुजिया) का भोग लगाया गया । १० बजे से संतो के सानिध्य में फूलों की भव्य होली खेली गई । केसर तिलक से संतो द्वारा सभी प्रेमियों को तिलक लगा होली की शुभकामनाएं दी गई। पारंपरिक सिंधी लोक नृत्य छेज पर श्रद्धालुगण मोहित हो झूम उठे !!! स्वामी मनोहर लाल जी महाराज, संत मोनूराम जी, संत नरेश लाल जी, संत नवीन जी आदि संतो ने सदगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित अमरापुर वाणी के होली भजन एवं पदों का भाव से मधुर गायन किया !!! सभी भक्तों को होली महोत्सव के बाद सिंधी मीठे घेवर, गुजिया, ठंडाई, पकोड़े आदि प्रसाद वितरण किया गया !!!

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश — जो प्रभु के सच्चे प्रेमी हैं उन्हें बहुत दु:ख मिलते हैं ।

धमतरी प्रेम प्रकाश आश्रम में फूलों से खेली गई होली एवं सत्संग का आयोजन हुआ

धमतरी। श्री प्रेम प्रकाश आश्रम धमतरी में सनातन धर्म के महत्वपूर्ण रंगों का त्योहार जो बुराई पर अच्छाई की जीत का पर्याय है ऐसे खुशियों से भरे होली महापर्व को बड़े ही धूम धाम एवं उमंग के साथ मनाया गया आश्रम में सुबह ८ बजे से ही इस भव्य त्यौहार को मनाने हेतु हलचल प्रारम्भ हो गई होली के इस महापर्व में बच्चों ने भी बढ़ चढ़ कर भाग लिया कुछ बच्चों ने भगवान कृष्ण एवं राधा रानी के बाल स्वरूप धारण कर होली मनाकर उत्सव की शोभा में चार चांद लगा दिए आज भगवान सत्यनारायण स्वामी की कथा का पाठ किया गया एवं भजन कीर्तन सम्पन्न हुआ आश्रम के प्रभारी संत लोकेशकुमार जी के द्वारा होली पर्व पर आयोजित विशेष सत्संग के दौरान आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के द्वारा रचित भजन भगवान पर हमेशा, विश्वास धर प्यारा निश्चय भला करेगा, प्रभू सदा तुम्हारा, प्रहलाद कर यकीना, प्रकट कीया हरी को, कहे टेऊँ कष्ट तांके, नरसिंह ने निवारा गाकर सुनाया एवं बताया कि संसार में सभी प्रकार के काम करना सरल है लेकिन भक्ति करना सबसे कठिन है और वह भी हिरण्यकश्यप जैसे राक्षस के घर में भक्त प्रहलाद के द्वारा भगवान का भजन करना वह भी विपरीत परिस्थिति में मुश्किल ही नहीं असंभव था अपने पिता के द्वारा विभिन्न यातनाओं को सहन करते हुए भी भक्त प्रहलाद ने भक्ति की क्योंकि उसको भगवान पर विश्वास था भगवान पर जो भी विश्वास करता है एवं उसकी भक्ति करता है उसका प्रभु निश्चय ही भला करते हैं चाहे उसके लिए उनको स्वयं ही अवतार लेकर आना क्यों न पड़े, भगवान तीन प्रकार से संसार में अवतार लेते है नित अवतार निमित्त अवतार एवं कारक अवतार नित अवतार माने भगवान नित्य ही संतों के रूप में अवतार ले कर जीवों का कल्याण करते हैं जैसे संत कबीर गुरु नानक स्वामी टेऊँराम आदि एवं निमित्त अवतार जैसे किसी एक विशेष प्रयोजन हेतु अवतार लेते हैं जैसे भक्त प्रहलाद की रक्षा हेतु भगवान नरसिंह के रूप में अवतार लिया भक्त प्रहलाद का भगवान पर यकीन था कि वे मेरी भक्ति के कारण मेरी सारी विपदाएं कष्ट दूर करेंगे और तीसरा कारक अवतार जो अनेक कारणों से युग परिवर्तन एवं पापों एवं पापियों के नाश एवं धर्म की रक्षा हेतु लिया गया अवतार कारक अवतार है जैसे भगवान राम भगवान कृष्ण परशुराम मत्स्यावतार आदि, आज जो हम होली का त्यौहार मना रहे हैं यह बुराई पर अच्छाई की विजय के रूप में मनाया जाता है इसमें जो होलिका दहन होता है उसमें हमें अपनी सारी बुरी आदतों एवं बुराइयों को जला कर आगे बुराई के कामों से बचकर

अच्छे कर्म करने का संकल्प लेना चाहिए एवं सभी से पुराने द्वेषों को भुलाकर सबसे प्रेम से रंग गुलाल लगाकर होली मनानी चाहिए होली के निमित्त आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के द्वारा रचित एक भजन भी संत ने गाया **सन्तों के संग होरी खेलो, पीवो प्रेम प्याला रे जांके पीवत होय बहारी, दिन दिन बढ़ती जाय खुमारी होवे मन मतिवाला रे श्रद्धा की तुम केसर करिये, इत्र अम्बीर श्रेष्ठ गुण धरिये लाओ ज्ञान गुलाला रे कहे टेऊँ यह होरी गाये, ब्रह्मानन्द में वृत्ति मिलाये पाओ आनन्द विशाला रे** एवं बताया कि होली का त्यौहार संतो के सानिध्य में गुरु दरबार में खेलना चाहिए गुरु नाम से प्रेम कर नाम के सिमरन का नशा करना चाहिए जिसके पीने से जीवन में बहारी आएगी आनन्द आएगा जो दिनोंदिन बढ़ता जाएगा केसर रूपी श्रद्धा से श्रेष्ठ गुणों रूपी इत्र एवं अम्बीर के साथ साथ ज्ञान रूपी गुलाल को धारण कर होली खेलनी चाहिए ऐसी होली खेलते हुए अपने चित्त को अपनी वृत्ति को ब्रह्मानन्द से मिलाएं जिससे आपको अनन्त आनन्द परम आनन्द की प्राप्ति होगी जो कभी समाप्त नहीं होगी उसको पाने के बाद और कुछ पाने की इच्छा ही नहीं होगी सत्संग के पश्चात सभी भक्तों ने फूलों से होली खेली एवं अपने गुरुदेव भगवान लक्ष्मीनारायण भगवान सत्यनारायण स्वामी एवं बाल गोपाल एवं नरसिंह भगवान के स्वरूपों के पावन चरणों में पुष्पों को समर्पित कर साथ ही रंग गुलाल लगाकर आशीर्वाद लिया साथ ही उपस्थित सभी गुरु भक्तों ने एक दूसरे के साथ गुलाल लगाकर होली मनाई एवं प्रसादी प्राप्त कर अपना जीवन धन्य किया

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

प्रत्येक मनुष्य को भोजन थोड़ा खाना चाहिये। रात्रि को आधा भोजन करना अच्छा है। इससे विवेक शक्ति और आयु बढ़ेगी। अनाज बचेगा, देश की सेवा होगी, और भी कई लाभ हैं।

जयपुर में श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का

105वाँ चैत्र मेला

बुधवार 01 अप्रेल से रविवार 05 अप्रेल 2026 तक

देखो प्रेमी आयके, अमरापुर स्थान ।
सन्त समागम पायके, अपना करो कल्यान ।।

कलियुग में प्रधान है, सेवा पुनि सत्संग ।
कह टेऊँ जिसके किए, होवे भव दुःख भंग ।।

समस्त सज्जनों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि सनातन धर्मी श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य योगीराज ब्रह्मश्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ श्री श्री 1008 **आचार्य सद्गुरु टेऊँरामजी महाराज** द्वारा स्थापित चैत्र मेला श्री अमरापुर स्थान, जयपुर में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष **सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज** की अध्यक्षता में सिन्धी तारीख 12 से 16 चैत्र सम्वत् 2083 तद्नुसार **बुधवार 01 अप्रेल से रविवार 05 अप्रेल तक** भव्य हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है. इस महाब्रह्मयज्ञ में प्रेम प्रकाश मण्डल के सन्त महात्मा, विद्वान, कवि, भगत सद्गुरु महाराज के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालेंगे. आप सबसे नम्र निवेदन है कि इस महोत्सव में सपरिवार आकर अपने मानव जीवन को कृतार्थ करें.

मंगलवार 31 मार्च	बुधवार 01 अप्रेल	गुरुवार–शुक्रवार 02–03 अप्रेल	शनिवार 04 अप्रेल	रविवार 05 अप्रेल
स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज की 61वीं पुण्यतिथि एवं मेले के उपलक्ष में श्रीमद्भगवत्गीता श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के पाठों का आरम्भ	प्रातः 7 से 10 बजे तक सत्संग 10 से 11 बजे तक हवन एवं ध्वजावंदन सायंकाल 3 से 9 बजे तक सत्संग मेले का प्रारम्भ	प्रातः 7 से 11 बजे तक सायं 3 से 9 बजे तक सत्संग	प्रातः 7 से 11 बजे तक सत्संग श्रीमद्भगवत्गीता श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के पाठों का भोग सायं 3 से 9 बजे तक सत्संग	प्रातः 4 बजे सत्संग शुरु होगा एवं प्रातः 7 बजे पल्लव पाकर उत्सव का समापन

नोट
1. सभी यात्री अपने पास सरकारी आईडी (आधार/पेन/वोटर आदि) अपने साथ जरूर लावें.
2. सभी यात्री आवश्यकतानुसार बिस्तर, ताला, टार्च, गिलास जरूर लावें.
3. सोना गहना व कीमती सामान साथ न लावें.
4. कोई भी माता–बहिन अपने पिता, भाई या पुरूष रिश्तेदार इत्यादि के सिवा अकेली न आवें.

सेवा में :
प्रेम प्रकाश मण्डल (ट्रस्ट)
अमरापुर स्थान, जयपुर–302001
फोन : 0141–2372423, 24 फैक्स : 2362424

पता :
सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज
श्री अमरापुर स्थान,
एम. आई. रोड, जयपुर–302001

e-mail : amrapurdarbar@yahoo.com | website : www.premprakashpanth.com | Live : youtube/amrapurdarbar

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी संतो के वचनों में पूर्ण विश्वास रखें तो आपके दुःख दर्द दूर हो जायेंगे।

अमरापुर गमन

डॉ. भगवानदास वरन्दानी

जयपुर। सेवाभावी, कर्मठ, मृदुभाषी श्री डॉ. भगवानदास जी वरन्दानी ६४ वर्ष की आयु पूर्ण कर दिनांक २७ फरवरी २०२६ को आचार्य प्रवर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के अभय श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारे। आप श्री अमरापुर स्थान जयपुर एवं प्रेम प्रकाश मण्डल के अन्य मेलों पर भी चिकित्सालय में अपनी सेवायें देते थे।

श्रीमती विद्यादेवी हबलानी

डबरा। श्री प्रेम प्रकाश आश्रम डबरा की सेवादारी, उदारचित्त, कर्मठ, सेवाभावी माता श्रीमती विद्यादेवी हबलानी धमपत्निअमरापुरवासी श्री नारायणदास हबलानी अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण कर दिनांक २२ फरवरी २०२६ को आचार्य प्रवर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के अभय श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारी। आप जीवन पर्यन्त गुरुचरणों की सेवा-सुश्रुषा में सलंग्न रही।

श्रीमती कीर्ति वलेचा

ग्वालियर। श्री प्रेम प्रकाश आश्रम ग्वालियर के सेवादारी मुकेश वलेचा जी की धर्मपत्नि श्रीमती कीर्ति वलेचा जी अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण कर दिनांक २१ फरवरी २०२६ को आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पावन श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारी। आपका पूरा परिवार गुरुदरबार की सेवा में सेवारत है।

नेत्रदानी श्रीमती रुक्मणी देवी कर्मचन्दानी

इन्दौर। श्रीमती रुक्मणी देवी कर्मचन्दानी धर्मपत्नि स्व. श्री कल्लूमल जी अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण कर दिनांक ०६ फरवरी २०२६ को आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारी। आपके परिजनों द्वारा आपकी मृत्यु उपरांत आपके नेत्रदान करके दो लोगों के जीवन को रोशन किया गया।

श्री सुदामामल वटवाणी

सूरत। श्री सुदामामल नवलमल वटवाणी जी ७० वर्ष की आयु में अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण कर दिनांक २३ फरवरी २०२६ को आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारे।

श्री हरीश कुमार सेतपालानी

ग्वालियर। स्वामी शांतिप्रकाश नेत्र चिकित्सालय ग्वालियर के सेवाधारी श्री कमल सेतपालानी के पिता श्री हरीश कुमार सेतपालानी जी अपनी जीवन यात्रा पूर्ण कर दिनांक ०५ मार्च २०२६ को आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारे।

श्री प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सदगुरु स्वामी श्री भगत प्रकाश जी महाराज एवं संत मंडली द्वारा दिवंगत आत्माओं को अमरापुर लोक में अपनी चरण-शरण में रखने हेतु आचार्य सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज व प्रभु परमात्मा से पल्लव पाकर प्रार्थना की गई।

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

मुक्ति किसके अधीन है ? मन से ही बन्धन मन से ही मुक्ति। हमें पहले बाँधने वाली चीज को ही खोजना पड़ेगा। तब ही सही मायने में हम मुक्ति को जान पायेंगे।

हम श्रधा सुमन चढ़ाने को, दृग–बिन्दु की माला लाऐ हैं....

धुनः– दरबार में मेरे सत्गुरू के,दुख–दर्द मिटाऐ..

गुरूदेव तुम्हारी, कृपा से हम, दरबार तुम्हारे आए हैं,
दर्शन का प्यासा, था ये मन, हम प्यास बुझाने आये है,
गुरूदेव तुम्हारी, कृपा से.....

1.गुरू नाम मैं इतनी,शक्ति है, भक्ती है, इसमें मस्ती है,
एक बार जो दर पे आता है, हर मुश्किल आसां लगती है,
हम श्रधा सुमन चढ़ाने को, दृग–बिन्दु की माला लाऐ हैं....
गुरूदेव तुम्हारी कृपा से हम, दरबार तुम्हारे आए हैं,
दर्शन का प्यासा, था ये मन, हम प्यास बुझाने आये है,
गुरूदेव तुम्हारी, कृपा से.....

2.मेरे सतगुरु, मेरे बाबा, सब भक्तों का कल्याण करो,
इस जनम–मरण के बंधन को, आसान करो,आसान करो,
इन पाँच विकारों से बाबा, छुटकारा पाने,आये है,
गुरूदेव तुम्हारी कृपा से हम, दरबार तुम्हारे आए हैं,
दर्शन का प्यासा, था ये मन, हम प्यास बुझाने आये है,
गुरूदेव तुम्हारी, कृपा से.....

3.जो, अमरापुर में आता है, वो प्रेम तुम्हारा, पाता है,
जो सतनाम साक्षी गाता है, वो भवसागर तर जाता है,
इस प्रेम प्रकाशी 'वधवा' के, गुरू प्रेम लुटाने आए हैं,
गुरूदेव तुम्हारी कृपा से हम, दरबार तुम्हारे आए हैं,
दर्शन का प्यासा, था ये मन, हम प्यास बुझाने आये है,
गुरूदेव तुम्हारी, कृपा से.....

प्रेम प्रकाशी दास हरकेश वधवा
समालखा मण्डी, हरियाणा

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

गुरु के बिना आत्मज्ञान नहीं होगा। बिना आत्मज्ञान के अनात्म देह का अभिमान संशय और भ्रम दूर नहीं होंगे। बिना भ्रम संशयों के दूर हुए शान्ति और सुख की प्राप्ति नहीं होगी।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर

सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

का यात्रा कार्यक्रम जनवरी 2025 से फरवरी 2026 तक

13 से 16 फरवरी 2026	ग्वालियर
17–18 फरवरी 2026	दिल्ली मल्कागंज (स्वामी जयदेव महाराज जन्मोत्सव)
19 फरवरी 2026	यात्रा
20 से 23 फरवरी 2026	दुबई
24 फरवरी 2026	यात्रा
25–26 फरवरी 2026	हरिद्वार
27 फरवरी से 1 मार्च 2026	जयपुर–सवाई माधोपुर
2 से 7 मार्च 2026	धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश)
4 मार्च 2026	धुलेण्डी (होली) धर्मशाला
08 मार्च 2026	धर्मशाला हिमाचल प्रदेश वार्षिकोत्सव

व्रत–पर्व–उत्सव

13 फरवरी 2026–शुक्रवार– एकादशी
15 फरवरी 2026– रविवार– महाशिवरात्री
17 फरवरी 2026– मंगलवार– अमावस्या
18 फरवरी 2026– बुधवार– चन्द्र दर्शन
22 फरवरी 2026–रविवार–चौथ (मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
27 फरवरी 2026–शुक्रवार– एकादशी
03 मार्च 2026– मंगलवार– होलिका दहन
04 मार्च 2026– बुधवार– पूर्णिमा, धूलेण्डी
06 मार्च 2026– शुक्रवार– गणेश चर्तुर्थी
15 मार्च 2026–रविवार– पापमोचिनी एकादशी
18 मार्च 2026– बुधवार– अमावस्या
19 मार्च 2026– गुरुवार– चैत्र नवरात्रा आरम्भ
20 मार्च 2026– शुक्रवार– चेटीचण्ड
24 मार्च 2026– मंगलवार– चौथ (मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
26 मार्च 2026– गुरुवार– दुर्गाष्टमी
26 मार्च 2026–गुरुवार– श्रीरामनवमी
29 मार्च 2026–रविवार– कामदा एकादशी
1 से 5 अप्रेल 2026– श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का महाकुम्भ 105वां चैत्र मेला
02 अप्रेल 2026– गुरुवार– पूर्णिमा, श्री हनुमान जन्मोत्सव
06 अप्रेल 2026– सोमवार– गणेश चर्तुर्थी
13 अप्रेल 2026–मंगलवार– वरुथिनी एकादशी
17 अप्रेल 2026– शुक्रवार– अमावस्या
18 अप्रेल 2026– शनिवार– चन्द्र दर्शन
22 अप्रेल 2026– बुधवार– चौथ (मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
27 अप्रेल 2026–सोमवार– मोहिनी एकादशी

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

सच का व्यवहार करना सारे मनुष्यों का परम धर्म है।
सच की कमाई का एक रूपया पाप की कमाई के पाँच रूपयों से अधिक अच्छा है।

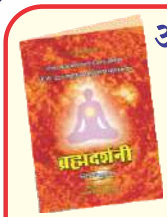

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज द्वारा रचियलु

‘ब्रह्मदर्शनी’

सिंधीअ में समुझाणी

-प्रो. लछमण परसराम हर्दवाणी (पुणे)

पोएं जनवरी २०२६ अंक खां अगिते-

॥ दोहा ॥

राम नाम जप राम प्यारा, राम नाम से हो निस्तारा।
राम नाम को चित्त में धारो, राम नाम को नाहिं विसारो।
राम नाम धन संचो मन में, राम नाम गूंजो अधरन में।
राम नाम की गाथा सुनले, राम नाम की महिमा गुनले।
राम नाम की पढ़ले पोथी, कह टेऊँ अन बातें थोथी॥ 1 ॥

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराजनि ईश्वर जो नालो जपण जो उपदेशु कंदे चवनि था, “हे मनुष! प्यारा, तूं राम- नामु जपींदो रहु. राम-नाम सां ई तुंहिंजो निस्तारु अर्थात् मुक्ती थींदी. राम-नाम खे पंहिंजे चित्त, अंतःकरण में विहारे छडि. तूं प्रभूअ जे नाम खे न विसारजांइ. तूं राम-नाम रूपी संपत्तीअ जो, धन जो पंहिंजे मन में संचय करि, राम नाम रूपी धनु मेड़ि. तूं पंहिंजे चपनि सां राम जो नामु जपींदो रहु, तुंहिंजे चपनि में ईश्वर जो नालो गूंजिजणु घुरिजे. तूं राम-नाम जी कथा ऐं महिमा बुधंदो करि. परमात्मा जे नाम जी तूं पोथी बि पढ़िजांइ. राम-नाम खां सवाइ बियूं सभु गाल्हियूं ख़ाली, पोरियूं ऐं अजायूं अथई. ”

संत महात्मा परमेश्वर जे नाम जो सुमिरनु करण लाइ चवनि था. भगवान जे नाम जो जपु कंदो रहणु मनुष लाइ हितकारी, मंगलकारी आहे. ईश्वर खे पंहिंजे मन में पको झलणु ज़रूरी आहे. परमात्मा जी मूर्ती मन में विहारणु ज़रूरी आहे ऐं भगवान जो भजनु करणु बि ज़रूरी आहे. राम जो, प्रभूअ जो सुमिरनु प्रेम सां करणु जीव लाइ कल्याणकारी आहे. राम-नाम जे जप सां, सुमिरन सां कल्याण ऐं आनंद जो उदय थिए थो. इन द्वारा कलिजुग जा पाप ऐं बुरायूं दूरि थी वञनि थियूं. वेदनि में अनेक प्रकारनि जा कर्म करण लाइ बुधायो वियो आहे, जिनि जे करण सां असांजा दुख दूरि थी सुख-संतोष जी प्राप्ती थी सघे थी. पर योग, यज्ञ, वैरागु, तपस्या आदि कर्म करण में डाढा डुखिया ऐं कठोरु आहिनि, जे आम माण्हू करे कोन सघंदो. तंहिंकरे भगिती-मार्ग में राम-नाम जे जप खे महत्वु मिल्यो आहे, जेको सभिनी लाइ आसानु आहे. जीवु, मनुषु, ईश्वर जोई अन्शु आहे या ईश्वरु ई आहे. पर हू पंहिंजे इन असुली स्वरूप खे विसारे वेठो आहे ; बिन्हीमें वेछो पइजी वियो आहे. जीवु ईश्वर खे विसारे वेठो आहे. भगिती इन वेछे खे मिटाए थी छडे. भगिती जीव खे भगवान जे वेझो थी आणे, भगवान जो दर्शनु थी कराए. इन लाइ नाम-सुमिरनु, जपु ज़रूरी आहे. तुलसीदास जे शब्दनि में-

राम जपु, राम जपु, राम जपु बावरे।
घोर भव-नीर-निधि नाम निज नाव रे॥

(हलदंडु)

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, शुल्क अवधि समाप्त होने की सूचना को आपके पते के ऊपर **LAST COPY** लिखकर उसे **BOLD** करके दर्शाया गया है. पत्रिका की निरंतर प्राप्ति के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को यथाशीघ्र करा लेना चाहिए.

– व्यवस्थापक

किसी कारणवश वितरण न होने पर निम्न पते पर वापस करें–

सम्पादक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम,
गाढ़वे की गोठ, लश्कर,
ग्वालियर 474001 (म.प्र.)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक : संतोष पंजवानी द्वारा मुद्रक : सुनील पंजवानी, सन्नी प्रिन्टर्स, मामा का बाजार, लश्कर, ग्वालियर से मुद्रित करवाकर, 401-झूलेलाल अपार्टमेंट, कृष्णा एन्क्लेव,समाधिया कॉलोनी,तारागंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 से प्रकाशित किया गया।
कार्यालयः प्रेम प्रकाश सन्देश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर-474001
(कार्यालय फोन 0751-4045144 पर सम्पर्क समय प्रातः 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)
सम्पादक : प्रहलाद सबनानी
प्रबन्ध सम्पादक : शंकरलाल सबनानी